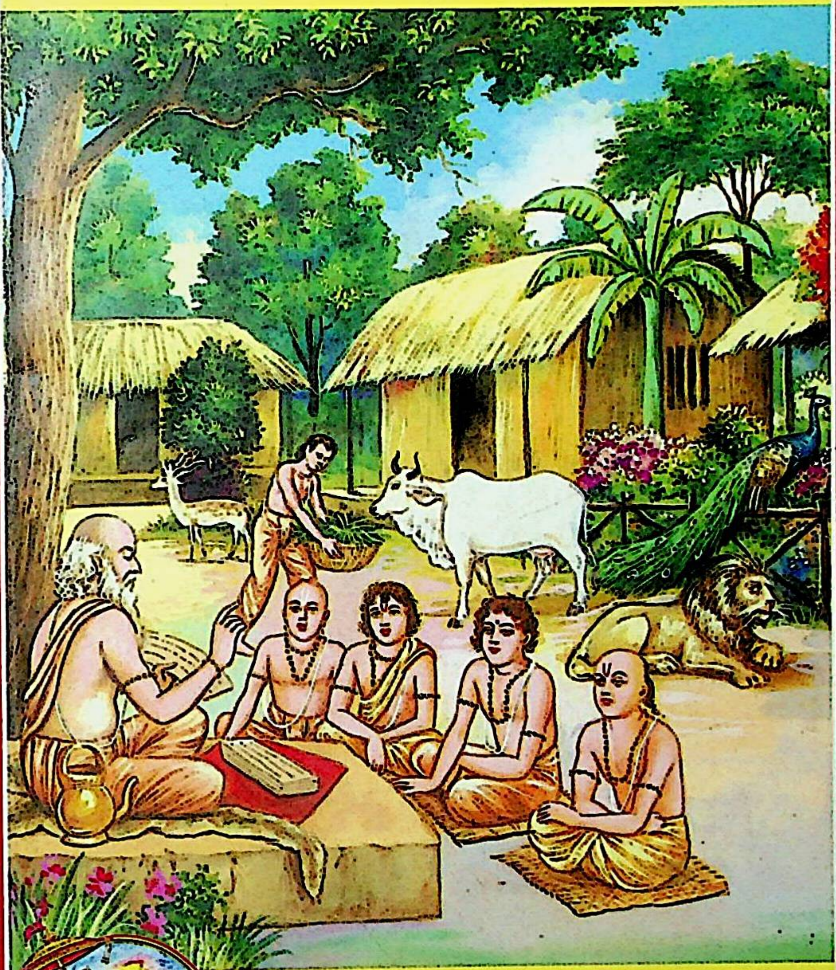
॥ श्रीहरिः ॥

1308 ▲

प्रेरक कहानियाँ



गीताप्रेस, गोरखपुर

2-5

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

1308

प्रेरक कहानियाँ

[श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनोंसे संगृहीत तीस शिक्षाप्रद कहानियाँ]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

संकलनकर्त्ता— राजेन्द्रकुमार धवन

सं० २०६५ इक्कीसवाँ पुनर्मुद्रण २५,०००
कुल मुद्रण ४,४०,०००

❖ मूल्य—७ रु०
(सात रुपये)

ISBN 81-293-0186-5

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : booksales@gitapress.org website : www.gitapress.org

॥ श्रीहरिः ॥

प्राक्कथन

बालक हो, युवा हो अथवा वृद्ध हो, सबकी कहानियाँ सुननेमें स्वाभाविक रुचि रहती है। समाजके उत्थान और पतनमें कहानियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सन्तोंके मुखसे निःसृत कहानियाँ जहाँ समाजमें अमृत (सद्गुण-सदाचार)-की गङ्गा बहाती हैं, वहीं सांसारिक उपन्यास, सिनेमा, टेलीविजन आदिके द्वारा प्रसारित कहानियाँ समाजमें विष (दुर्गुण-दुराचार)-की सरिता बहाती हैं। बालककी प्रथम गुरु माँ भी कहानियोंके माध्यमसे ही उसके कोमल हृदयमें अच्छे संस्कार जाग्रत् करती है, जो उसके भावी जीवनको उन्नत बनानेमें सहायक होते हैं।

पारमार्थिक विषयको सरलतासे समझनेमें भी कहानियाँ बहुत सहायक होती हैं। पौराणिक कहानियों (कथाओं)-का भी यही तात्पर्य है कि पारमार्थिक विषय सरलतासे समझमें आ जाय। कठिन-से-कठिन पारमार्थिक बातोंको भी कहानियोंके सहारे सुगमतापूर्वक समझकर जीवनमें उतारा जा सकता है। कहानियोंके द्वारा मित्रसम्मित अथवा कान्तासम्मित उपदेश प्राप्त होता है, जो मनुष्यको स्वभावतः प्रिय होता है। इसलिये परमश्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज अपने प्रवचनोंमें मार्मिक विषयको समझानेके उद्देश्यसे अनेक कहानियाँ कहा करते हैं, जो आबालवृद्ध सभी श्रोताओंके हृदयपर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। उनमेंसे बत्तीस कहानियोंका संकलन पहले 'आदर्श कहानियाँ' के नामसे प्रकाशित हो चुका है। अब तीस कहानियोंका संकलन प्रस्तुत पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है, पाठकगण इन रोचक एवं ज्ञानप्रद कहानियोंको पसन्द करेंगे और इनकी शिक्षाओंको अपने जीवनमें उतारनेकी चेष्टा करेंगे।

विनीत—

राजेन्द्रकुमार धवन

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

१. बुद्धिमान् बनजारा

एक बनजारा था। वह बैलोंपर मेट (मुल्तानी मिट्टी) लादकर दिल्लीकी तरफ आ रहा था। रास्तेमें कई गाँवोंसे गुजरते समय उसकी बहुत-सी मेट बिक गयी। बैलोंकी पीठपर लदे बोरे आधे तो खाली हो गये और आधे भरे रह गये। अब वे बैलोंकी पीठपर टिकें कैसे? क्योंकि भार एक तरफ हो गया! नौकरोंने पूछा कि क्या करें? बनजारा बोला—'अरे! सोचते क्या हो, बोरोंके एक तरफ रेत (बालू) भर लो। यह राजस्थानकी जमीन है, यहाँ रेत बहुत है।' नौकरोंने वैसा ही किया। बैलोंकी पीठपर एक तरफ आधे बोरेमें मेट हो गयी और दूसरी तरफ आधे बोरेमें रेत हो गयी।

दिल्लीसे एक सज्जन उधर आ रहे थे। उन्होंने बैलोंपर लदे बोरोंमेंसे एक तरफ झरते हुए देखी तो वे बोले कि बोरोंमें एक तरफ रेत क्यों भरी है? नौकरोंने कहा—'सन्तुलन करनेके लिये।' वे सज्जन बोले—'अरे! यह तुम क्या मूर्खता करते हो? तुम्हारा मालिक और तुम एक-से ही हो। बैलोंपर मुफ्तमें ही भार ढोकर उनको मार रहे हो! मेटके आधे-आधे दो बोरोंको एक ही जगह बाँध दो तो कम-से-कम आधे बैल तो बिना भारके खुले चलेंगे।' नौकरोंने कहा कि आपकी बात तो ठीक जँचती है, पर हम वही करेंगे, जो हमारा मालिक कहेगा। आप जाकर हमारे मालिकसे यह बात कहो और उनसे हमें हुक्म दिलवाओ। वह मालिक (बनजारे)-से मिला और उससे

बात कही। बनजारेने पूछा कि आप कहाँके हैं? कहाँ जा रहे हैं? उसने कहा कि मैं भिवानीका रहनेवाला हूँ। रुपये कमानेके लिये दिल्ली गया था। कुछ दिन वहाँ रहा, फिर बीमार हो गया। जो थोड़े रुपये कमाये थे, वे खर्च हो गये। व्यापारमें घाटा लग गया। पासमें कुछ रहा नहीं तो विचार किया कि घर चलना चाहिये। उसकी बात सुनकर बनजारा नौकरोंसे बोला कि इनकी सम्मति मत लो। अपने जैसे चलते हैं, वैसे ही चलो। इनकी बुद्धि तो अच्छी दीखती है, पर उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता। अगर ठीक निकलता तो ये धनवान् हो जाते। हमारी बुद्धि भले ही ठीक न दीखे, पर उसका नतीजा ठीक होता है। मैंने कभी अपने काममें घाटा नहीं खाया।

बनजारा अपने बैलोंको लेकर दिल्ली पहुँचा। वहाँ उसने जमीन खरीदकर मेट और रेत दोनोंका अलग-अलग ढेर लगा दिया और नौकरोंसे कहा कि बैलोंको जंगलमें ले जाओ और जहाँ चारा-पानी हो, वहाँ उनको रखो। यहाँ उनको चारा खिलायेंगे तो नफा कैसे कमायेंगे? मेट बिकनी शुरू हो गयी। उधर दिल्लीका बादशाह बीमार हो गया। वैद्यने सलाह दी कि अगर बादशाह राजस्थानके धोरे (रेतके टीले)-पर रहें तो उनका शरीर ठीक हो सकता है। रेतमें शरीरको नीरोग करनेकी शक्ति होती है। अतः बादशाहको राजस्थान भेजो।

'राजस्थान क्यों भेजें? वहाँकी रेत यहीं मँगा लो!'

'ठीक बात है। रेत लानेके लिये ऊँटको भेजो।'

'ऊँट क्यों भेजें? यहीं बाजारमें रेत मिल जायगी।'

'बाजारमें कैसे मिल जायगी?'

'अरे! दिल्लीका बाजार है, यहाँ सब कुछ मिलता है! मैंने एक जगह रेतका ढेर लगा हुआ देखा है।'

'अच्छा! तो फिर जल्दी रेत मँगवा लो।'

बादशाहके आदमी बनजारेके पास गये और उससे पूछा कि रेत क्या भाव है? बनजारा बोला कि चाहे मेट खरीदो, चाहे रेत खरीदो, एक ही भाव है। दोनों बैलोंपर बराबर तुलकर आये हैं। बादशाहके आदमियोंने वह सारी रेत खरीद ली। अगर बनजारा दिल्लीसे आये उस सज्जनकी बात मानता तो ये मुफ्तके रुपये कैसे मिलते? इससे सिद्ध हुआ कि बनजारेकी बुद्धि ठीक काम करती थी।

इस कहानीसे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि जिन्होंने अपनी वास्तविक उन्नति कर ली है, जिनका विवेक विकसित हो चुका है, जिनको तत्त्वका अनुभव हो चुका है, जिन्होंने अपने दुःख, सन्ताप, अशान्ति आदिको मिटा दिया है, ऐसे सन्त-महात्माओंकी बात मान लेनी चाहिये; क्योंकि उनकी बुद्धिका नतीजा अच्छा हुआ है। जैसे, किसीने व्यापारमें बहुत धन कमाया हो तो वह जैसा कहे, वैसा ही हम करेंगे तो हमें भी लाभ होगा। उनको लाभ हुआ है तो हमें लाभ क्यों नहीं होगा? ऐसे ही हम सन्त-महात्माओंकी बात मानेंगे तो हमारेको भी अवश्य लाभ होगा। उनकी बात समझमें न आये तो भी मान लेनी चाहिये। हमने आजतक अपनी समझसे काम किया तो कितना लाभ लिया है? अपनी बुद्धिसे अबतक हमने कितनी उन्नति की है?

२. ठण्डी रोटी

एक लड़का था। माँने उसका विवाह कर दिया। परन्तु वह कुछ कमाता नहीं था। माँ जब भी उसको रोटी परोसती थी, तब वह कहती कि बेटा, ठण्डी रोटी खा लो। लड़केकी समझमें नहीं आया कि माँ ऐसा क्यों कहती है। फिर भी वह चुप रहा। एक दिन माँ किसी कामसे बाहर गयी तो जाते समय अपनी बहू (उस लड़केकी स्त्री)-को कह गयी कि जब लड़का आये तो उसको रोटी परोस देना। रोटी परोसकर कह देना कि ठण्डी रोटी खा लो। उसने अपने पतिसे वैसा ही कह दिया तो वह चिढ़ गया कि माँ तो कहती ही है, यह भी कहना सीख गयी! वह अपनी स्त्रीसे बोला कि बता, रोटी ठण्डी कैसे हुई? रोटी भी गरम है, दाल-साग भी गरम हैं, फिर तू ठण्डी रोटी कैसे कहती है? वह बोली कि यह तो आपकी माँ जाने। आपकी माँने मेरेको ऐसा कहनेके लिये कहा था, इसलिये मैंने कह दिया। वह बोला कि मैं रोटी नहीं खाऊँगा। माँ तो कहती ही थी, तू भी सीख गयी!

माँ घर आयी तो उसने बहूसे पूछा कि क्या लड़केने भोजन कर लिया? वह बोली कि उन्होंने तो भोजन किया ही नहीं, उलटा नाराज हो गये! माँने लड़केसे पूछा तो वह बोला कि माँ, तू तो रोजाना कहती थी कि ठण्डी रोटी खा ले और मैं सह लेता था, अब यह भी कहना सीख गयी! रोटी तो गरम होती है, तू बता कि रोटी ठण्डी कैसे है? माँने पूछा कि ठण्डी रोटी किसको कहते हैं? वह बोला—

सुबहकी बनायी हुई रोटी शामको ठण्डी होती है। ऐसे ही एक दिनकी बनायी हुई रोटी दूसरे दिन ठण्डी होती है। बासी रोटी ठण्डी और ताजी रोटी गरम होती है। माँने कहा—बेटा, अब तू विचार करके देख। तेरे बापकी जो कमाई है, वह ठण्डी, बासी रोटी है। गरम, ताजी रोटी तो तब होगी, जब तू खुद कमाकर लायेगा। लड़का समझ गया और माँसे बोला कि अब मैं खुद कमाऊँगा और गरम रोटी खाऊँगा!

इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है कि विवाह होनेके बाद ठण्डी रोटी नहीं खानी चाहिये, अपनी कमाईकी रोटी खानी चाहिये। जब भगवान् राम वनवासमें गये, तब रावण सीताजीको ले गया। किसी भी रामायणमें यह सुननेमें नहीं आया कि रामजीने भरतको समाचार दिया हो कि रावण मेरी स्त्रीको ले गया है, तुम मेरी सहायता करो। कारण कि रामजी इस बातको समझते थे कि विवाह किया है तो स्त्रीकी रक्षा करना, उसका पालन करना मेरा कर्तव्य है। उन्होंने अपनी भुजाओंके बलसे पहले सुग्रीवकी सहायता की, पीछे उससे सहायता ली। सुग्रीवको राज्य, कोष, पुर और नारी—ये चार चीजें दिलाकर अपनी एक स्त्रीके लिये सहायता ली। इसलिये विवाह तभी करना चाहिये, जब स्त्रीका और बच्चोंका पालन-पोषण करनेकी ताकत हो। यह ताकत न हो तो विवाह नहीं करना चाहिये।

३. सन्तोंकी शरण

एक गाँवमें एक ठाकुर थे। उनके कुटुम्बमें कोई आदमी नहीं बचा, केवल एक लड़का रह गया। वह ठाकुरके घर काम करने लग गया। रोजाना सुबह वह बछड़े चराने जाता था और लौटकर आता तो रोटी खा लेता था। ऐसे समय बीतता गया। एक दिन दोपहरके समय वह बछड़े चराकर आया तो ठाकुरकी नौकरानीने उसको ठण्डी रोटी खानेके लिये दे दी। उसने कहा कि थोड़ी-सी छाछ या राबड़ी मिल जाय तो ठीक है। नौकरानीने कहा कि जा-जा, तेरे लिये बनायी है राबड़ी! जा, ऐसे ही खा ले, नहीं तो तेरी मरजी! उस लड़केके मनमें गुस्सा आया कि मैं धूपमें बछड़े चराकर आया हूँ, भूखा हूँ, पर मेरेको बाजरेकी रूखी रोटी दे दी, राबड़ी माँगी तो तिरस्कार कर दिया! वह भूखा ही वहाँसे चला गया। गाँवके पासमें एक शहर था। उस शहरमें सन्तोंकी एक मण्डली आयी हुई थी। वह लड़का वहाँ चला गया। सन्तोंने उसको भोजन कराया और पूछा कि तेरे परिवारमें कौन है? उसने कहा कि कोई नहीं है तो सन्तोंने कहा कि तू साधु बन जा। लड़का साधु बन गया। फिर वह पढ़नेके लिये काशी चला गया। वहाँ पढ़कर वह विद्वान् हो गया। फिर समय पाकर वह मण्डलेश्वर (महन्त) बन गया। मण्डलेश्वर बननेके बाद एक दिन उनको उसी शहरमें आनेका निमन्त्रण मिला। वे अपनी मण्डलीको लेकर वहाँ आये। जिनके यहाँ वे बचपनमें काम करते थे, वे ठाकुर बूढ़े हो गये थे। ठाकुर उनके पास गये, उनका सत्संग किया और प्रार्थना की कि महाराज! एक बार हमारी कुटियामें पधारो, जिससे हमारी कुटिया पवित्र हो जाय! मण्डलेश्वरजीने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

मण्डलेश्वरजी अपनी मण्डलीके साथ ठाकुरके घर पधारे। भोजनके लिये पंक्ति बैठी। गीताके पन्द्रहवें अध्यायका पाठ हुआ। फिर सबने भोजन करना आरम्भ किया। महाराजके सामने तख्ता

लगा हुआ था और उसपर तरह-तरहके भोजनके पदार्थ रखे हुए थे। अब ठाकुर महाराजके पास आये। साथमें नौकर था, जिसके हाथमें हलवेका पात्र था। ठाकुर प्रार्थना करने लगे कि 'महाराज! कृपा करके थोड़ा-सा हलवा मेरे हाथसे ले लो!' महाराजको हँसी आ गयी। ठाकुरने पूछा कि 'आप हँसे कैसे?' महाराज बोले कि 'मेरेको पुरानी बात याद आ गयी, इसलिये हँसा।' ठाकुर बोले कि 'बताओ, वह बात क्या है?' महाराजने सब सन्तोंसे कहा कि 'भाई, थोड़ा ठहर जाओ, बैठे रहो, ठाकुर बात पूछते हैं तो बताता हूँ।' महाराजने ठाकुरसे पूछा कि आपके कुटुम्बमें वह परिवार रहता था, उस परिवारमें अब कोई है क्या? ठाकुर बोले कि केवल एक लड़का था। उसने कई दिन बछड़े चराये, फिर न जाने कहाँ चला गया! बहुत दिन हो गये, फिर कभी उसको देखा नहीं। महाराज बोले कि वही मैं हूँ! पासमें सन्त-मण्डली ठहरी हुई थी, मैं वहाँ चला गया। पीछे काशी चला गया, वहाँ पढ़ाई की और फिर मण्डलेश्वर बन गया। यही वह आँगन है, जहाँ आपकी नौकरानीने मेरेको थोड़ी-सी राबड़ी देनेसे भी मना कर दिया था। अब मैं भी वही हूँ, आँगन भी वही है और आप भी वही हैं, पर अब आप अपने हाथसे मोहनभोग दे रहे हो कि महाराज, कृपा करके थोड़ा मेरे हाथसे ले लो!

माँगे मिले न राबड़ी, करूँ कहाँ लगि वरण।
मोहनभोग गले में अटक्या, आ सन्तों की शरण॥

सन्तोंकी शरण लेनेमात्रसे इतना हो गया कि जहाँ राबड़ी नहीं मिलती थी, वहाँ मोहनभोग भी गलेमें अटक रहा है! अगर कोई भगवान्‌की शरण ले ले तो वह सन्तोंका भी आदरणीय हो जाय। लखपति-करोड़पति बननेमें सब स्वतन्त्र नहीं हैं, पर भगवान्‌के शरण होनेमें, भगवान्‌का भक्त बननेमें सब-के-सब स्वतन्त्र हैं और ऐसा मौका इस मनुष्यजन्ममें ही है।

४. मरकर आदमी कहाँ गया?

एक साधारण ब्राह्मण थे। वे काशी पढ़कर आये। सिरपर पुस्तकें लदी हुई थीं। शहरसे होकर निकले तो वर्षा आ गयी। पासमें छाता था नहीं। अतः एक मकानके दरवाजेके पास जगह देखकर खड़े हो गये। उसके ऊपर एक वेश्या रहती थी। कुछ आदमी 'रामनाम सत्य है' कहते हुए एक मुर्देको लेकर वहाँसे निकले। उस वेश्याने आवाज देकर एक लड़कीसे कहा कि जा, पता लगाकर आ कि यह स्वर्गमें गया या नरकमें गया? लड़की चली गयी। पण्डितजीने सुना तो वहीं ठहर गये कि ऐसी कौन-सी विद्या है, जिससे मरनेवालेका पता लग जाय कि वह कहाँ गया? थोड़ी देरमें वह लड़की आयी और वेश्यासे बोली कि यह तो नरकोंमें गया। इतनेमें दूसरा मुर्दा आया तो वेश्याने फिर लड़कीको भेजा। लड़कीने आकर कहा कि यह तो स्वर्गमें गया। पण्डितजीने विचार किया कि मैं इतने वर्ष काशी रहा, वहाँ कितनी पुस्तकें पढ़ीं, पर यह पता नहीं लगता कि मरनेवाला कहाँ गया? यह विद्या तो मेरेको सीखनी चाहिये।

पण्डितजी मकानके ऊपर चले गये। वेश्याने देखा तो पहचान लिया कि यह मेरा ग्राहक तो है नहीं। उसने पूछा कि यहाँ कैसे आये? पण्डितजी बोले—'माताजी! मैं............'। वेश्या बोली—मेरेको माताजी मत कहो, मैं तो एक वेश्या हूँ। पण्डितजी बोले—हमारे लिये तो माँ, बहन या बेटी ही हो! वेश्या बोली—क्या बात है? पण्डितजीने कहा—तुमने लड़कीसे कहा कि पता लगाकर आओ, मरनेवाला कहाँ गया तो उसने आकर कहा कि एक नरकमें गया, एक स्वर्गमें गया, यह क्या

विद्या है? मैं जानना चाहता हूँ। वेश्याने उस लड़कीको बुलाया और कहा कि महाराजको बता, तूने कैसे परीक्षा की कि यह नरकमें गया, यह स्वर्गमें गया। वह कहने लगी कि महाराज! वे मुर्दा लिये जा रहे थे तो मैंने उनसे पूछा कि यह कहाँसे आया है, किस मोहल्लेका है? फिर मैं पता लगाकर उस मोहल्लेमें पहुँची तो लोगोंको रोते देखकर पता लगा कि इस घरका आदमी मर गया। उनके पड़ोसियोंके घर जाकर सुना तो लोग कह रहे थे कि वह आदमी मर गया तो हम निहाल हो गये! वह सबकी चुगली करता था, चोरी करा देता था, लड़ाई करा देता था, झूठी गवाही देकर फँसा देता था, बहुत दुःख देता था। मर गया तो बहुत अच्छा हुआ, आफत मिटी! ऐसी बातें मैंने कई घरोंमें सुनीं तो आकर कहा कि वह नरकोंमें गया। दूसरा मुर्दा आया तो उसका भी पता लगाकर मैं उसके मोहल्लेमें गयी। वहाँ लोग बातें कर रहे थे कि राम-राम, गजब हो गया! वह आदमी तो हमारे मोहल्लेका एक प्रकाश था। वह सन्त-महात्माओंको बुलाया करता था, सत्संग कराता था, कोई बीमार हो जाय तो रातों जगता था, किसीपर कोई आफत आती तो उसकी तन-मन-धनसे सहायता करता था! वह चला गया तो हमारे मोहल्लेमें अँधेरा हो गया! ऐसी बातें मैंने सुनीं तो आकर कहा कि वह स्वर्गमें गया।

पण्डितजी बोले—अरे, ये बातें तो हमारी पुस्तकोंमें भी लिखी हैं कि अच्छे काम करनेवालेकी सद्गति होती है और बुरे काम करनेवालेकी दुर्गति होती है, पर यह बात हमारी अक्लमें ही नहीं आयी!

५. एक फूँककी दुनिया

एक बड़े विरक्त, त्यागी सन्त थे। एक व्यक्ति उनका शिष्य हो गया। वह बहुत पढ़ा-लिखा था। उसने व्याख्यान देना शुरू कर दिया। बहुत लोग उसके पास आने लगे। बाबाजीने उसको समझाया कि व्याख्यान देना कोई बढ़िया चीज नहीं है, इसमें फँसना नहीं। उनका शिष्य माना नहीं और दूसरी जगह जाकर व्याख्यान देने लगा। सब लोग वहीं जाने लगे। व्याख्यान सुननेके लिये बड़े-बड़े धनीलोग तथा स्वयं राजा भी आने लगे। बाबाजीको उसपर दया आ गयी कि मेरा शिष्य फँस जायगा!

एक दिन बाबाजी अपने शिष्यके पास पहुँचे। उसने देखा तो कहा—अरे! हमारे गुरु महाराज पधारे हैं! लोगोंने सुना तो सब बड़ी संख्यामें इकट्ठे हुए। उनका बड़ा आदर हुआ, प्रशंसा हुई, महिमा हुई कि हमारे महाराजके गुरुजी हैं! कितने बड़े हैं! सभा बैठी। राजा भी आये हुए थे। बाबाजीके मनमें क्या आयी कि उठकर राजाके पास गये और जोरसे 'भर्र..............' करके अपानवायु छोड़ दी! लोगोंने देखा तो उठ गये कि कुछ नहीं है! चेला तो अच्छा है, पर गुरुमें कुछ नहीं! लोग भी नाराज हुए, राजा भी नाराज हुए। बाबाजीने कहा कि आज हम यहाँसे चले जायँगे। लोग मनमें प्रसन्न हुए कि अच्छी बात है, आफत मिटी! महाराजके गुरुजी हैं, इसलिये थोड़ा आदर तो कर दें—ऐसा समझकर सभ्यताके नाते बहुत-से लोग बाबाजीको पहुँचानेके लिये आये। वहाँ एक मरी हुई चिड़िया पड़ी थी। बाबाजीने उस चिड़ियाको अँगुलियोंसे पकड़कर ऊपर उठा लिया और सबको दिखाने लगे। लोग देखने लगे कि

बाबाजी यह क्या करते हैं? बाबाजीने फूँक मारी तो चिड़िया 'फुर्र............' करके उड़ गयी! अब लोग वाह-वाह करने लगे कि बाबाजी तो बड़े सिद्ध महात्मा हैं! चारों तरफ बाबाजीकी जय-जयकार होने लगी।

बाबाजीने शिष्यको अपने पास बुलाया और कहा कि तू समझा कि नहीं? शिष्य बोला—क्या समझना है महाराज! बाबाजी बोले—इस दुनियाकी क्या कीमत समझी है तूने? यह सब दुनिया एक फूँककी है। एक फूँकमें भाग जाय और एक फूँकमें आ जाय! फूँककी क्या इज्जत है! इसमें कोई तत्त्व नहीं है। इसलिये मान-बड़ाईमें न फँसकर भगवान्‌का भजन करो। ऊँचे आसनपर बैठनेसे, व्याख्यान देनेसे कोई बड़ा नहीं हो जाता।

६. चार साधु और चोर

चार साधु थे। वे शहरके पास एक जंगलमें रहते थे और भगवान्‌का भजन-स्मरण करते थे। उन चारों साधुओंकी अपनी अलग-अलग एक निष्ठा थी। एक दिन वहाँके राजाने अपनी स्त्रीसे कहा कि हमें अपने लड़केको अच्छा सन्त बनाना है, फिर वह चाहे राज्य करे, चाहे साधु बन जाय। रानी बोली कि महाराज! जो सन्त बनना चाहता है, वही सन्त बन सकता है, दूसरेके बनानेसे कैसे बन जायगा? आपका और मेरा उद्योग थोड़े ही काम करेगा? राजाने कहा कि इसका एक उपाय है—सत्संग! *'सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई॥'* (मानस, बाल० ३।५)। रानी बोली कि ऐसा कोई अच्छा सन्त है, जिसके पास लड़केको भेजें? राजा बोला कि यहाँ पासमें ही जंगलमें चार

अच्छे सन्त रहते हैं। उनके पास लड़केको भेज देते हैं। इस प्रकार राजा और रानी बातें कर रहे थे। रात्रिका समय था। दैवयोगसे एक चोर, जो चोरी करनेके उद्देश्यसे वहाँ आया था, छिपकर उनकी बातें सुन रहा था। उस चोरके मनमें आया कि चोरी करनेसे तो मैं फँस भी सकता हूँ, पर साधु बन जाऊँ तो काम बन जायगा! राजकुँअर आयेगा और मेरा चेला बन जायगा, फिर चोरी करनेकी क्या जरूरत है?

चोरने गेरुआ वस्त्र पहन लिये और जंगलमें चला गया। उसके मनमें आया कि कोई पूछेगा तो मैं क्या उपदेश दूँगा! ऐसा सोचकर वह चार सन्तोंमेंसे पहले सन्तके पास गया और पूछा कि महाराज! कल्याण कैसे हो? सन्तने कहा—भाई, किसीका जी मत दुखाओ, किसीको दुःख मत दो—'दिल किसीका मत दुःखा, यह दिल खुदाका नूर है'! चोर बोला—और महाराज! सन्त बोले—औरकी जरूरत नहीं, इस एक बातसे ही काम बन जायगा। चोर दूसरे सन्तके पास पहुँचा और बोला कि महाराज! मैं कल्याण चाहता हूँ, कोई उपाय बताओ। सन्त बोले—कभी किंचिन्मात्र भी झूठ नहीं बोलना, सदा सत्य ही बोलना, चाहे गला क्यों न कट जाय! जैसा देखा, जैसा सुना और जैसा समझा, ठीक वैसा-का-वैसा कह देना—

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप॥

चोर बोला—और कोई बात? सन्त बोले—औरकी जरूरत नहीं है। अब वह चोर तीसरे सन्तके पास गया और बोला कि महाराज! मेरा कल्याण कैसे हो? सन्त बोले—सीधी-

सादी बात है, रात-दिन राम-राम करो—

जुगति बताओ 'जालजी', राम मिलन की बात।
मिल जासी ओ 'मालजी' राम रटो दिन रात॥

चोर बोला—और कोई उपाय? सन्त बोले—और उपायकी जरूरत नहीं है। अब वह चौथे सन्तके पास पहुँचा और बोला कि महाराज! कल्याण कैसे हो? सन्त बोले—भाई! एक भ़गवान्‌के शरण हो जाओ। मनमें यह बात अटल रहे कि मैं तो केवल भगवान्‌का हूँ। जैसे विवाह होनेके बाद लड़कीके मनमें यह बात दृढ़ हो जाती है कि मैं कुँआरी नहीं हूँ, मेरा विवाह हो गया है, ऐसे ही मनमें यह बात दृढ़ हो जाय कि मैं भगवान्‌का हो गया, अब मैं और किसीका नहीं हो सकता—***'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'!*** चोर बोला—और कोई बात? सन्त बोले—औरकी जरूरत ही नहीं, इतना ही काम है।

चोरने चारों सन्तोंसे चार बातें सीख लीं और आगे जाकर बैठ गया। अब राजा आया। वह क्रमशः चारों सन्तोंके पास गया। चारोंने एक-एक बात कह दी। राजाने देखा कि आगे पाँचवाँ साधु भी बैठा है! राजा उसके पास भी गया और प्रार्थना की कि महाराज! कृपा करके कल्याणकी बात बतायें। वह साधुवेषधारी चोर चुपचाप ध्यानमें बैठा रहा, कुछ बोला नहीं। राजाने ज्यादा प्रार्थना की तो वह बोला—मैं जैसा बताऊँगा, वैसा करोगे? राजाने कहा कि हाँ महाराज! वैसा ही करूँगा। वह बोला—किसीका जी मत दुखाओ। राजा बोला—और कोई बात? वह बोला—सदा सत्य बोलो। राजा बोला—दूसरी कोई बात? वह बोला—भगवान्‌के नामका जप करो। राजा बोला—

और कुछ बताइये! वह बोला—भगवान्‌के शरण हो जाओ। राजा बोला—महाराज! और कोई बात? वह बोला—सन्त जैसा कहे, वैसा कर दो। राजाने मनमें विचार किया कि यह सन्त ज्यादा ऊँचा है! अन्य सन्तोंने तो एक-एक बात कही, पर इन्होंने पाँच बातें कह दीं! राजा बड़े सरल स्वभावका था। उसको मालूम नहीं था कि सन्तकी पहचान इस तरह नहीं होती। राजा लौटकर महलमें आ गया।

रात होनेपर वह चोर फिर छिपकर महलमें आया। जब राजा रानीके पास गया, तब वह चोर दरवाजेके पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगा। रानीने पूछा कि क्या बात हुई? राजाने कहा कि मैं जंगलमें सन्तोंके दर्शन करके आया हूँ। मैं तो चार ही सन्त समझता था, पर वहाँ पाँच सन्त बैठे थे। रानी बोली—वहाँ जाकर आपने क्या कहा? राजा बोला—मैंने भगवत्प्राप्तिकी बात पूछी तो उनमेंसे एक सन्तने कहा कि किसीका जी मत दुखाओ, दूसरेने कहा कि सदा सत्य बोलो, तीसरेने कहा कि नामजप करो, चौथेने कहा कि भगवान्‌के शरण हो जाओ। परन्तु पाँचवें सन्तने उन चारों सन्तोंकी चार बातें भी बतायीं और साथमें पाँचवीं बात यह बतायी कि सन्तकी आज्ञाका पालन करो। राजा और रानी—दोनों सच्चे और सरल स्वभावके थे। उन्होंने विचार किया कि वह पाँचवाँ सन्त ठीक है, अपने लड़केको उसीके पास भेजो। उनकी बातोंका चोरपर बड़ा असर पड़ा कि अरे! मैंने तो नकली बात कही, उसपर भी राजाने श्रद्धा कर ली। अगर सच्ची बात कहूँ तो कितनी मौज हो जाय! राजाके सद्भावके कारण चोरका हृदय बदल गया! वह सच्चा साधु हो गया और जंगलमें निकल गया।

उसने विचार किया कि चार बातोंका तो मैं ठीक पालन करूँगा, पर पाँचवीं बातका पालन तब हो, जब कोई अच्छा और सच्चा सन्त मिले। कोई ऐसा भगवत्प्राप्त सन्त मिले, जिनकी आज्ञाका मैं पालन करूँ। वह सन्तको ढूँढ़नेमें लग गया।

पहले चोर होनेसे वह चालाक तो था ही, इसलिये हरेक साधुपर उसका विश्वास नहीं बैठता था। वह कई साधुओंके पास गया, पर किसीपर उसका विश्वास नहीं बैठा। अब अच्छे सन्तको पानेके लिये उसकी लगन लग गयी। उसके मनमें यह बात थी कि जिसमें मेरा चित्त खिंच जाय, मेरा विश्वास हो जाय, उसीको गुरु बनाऊँगा। भगवान्ने उसकी सच्ची लगन देखी तो वे सन्त बनकर उसके सामने आ गये। उनको देखते ही उसपर असर पड़ा और वह बोला कि महाराज! मैं आपके शरण हूँ, मेरेको दीक्षा दीजिये। आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूँगा। सन्तरूपमें भगवान् बोले—जैसा मैं कहूँगा, वैसा करेगा क्या? सच्ची बात कहता है न? वह बोला—हाँ महाराज! बिलकुल सच्ची बात कहता हूँ। भगवान् बोले—तो फिर पहले एक काम करो, पीछे तुम्हें मन्त्र देंगे। तुम यह काम करो कि जो किसीका जी नहीं दुखाता, उसका सिर काटकर लाओ, और जो सत्य बोलता है, उसका सिर काटकर लाओ, और जो नामजप करता है, उसका सिर काटकर लाओ, और जो भगवान्के शरण है, उसका सिर काटकर लाओ। ये चार सिर काटकर लाओ, तब तुम्हें दीक्षा देंगे। उसने सोचा कि ये चारों तो एक ही जगह बैठे हैं, काम आसानीसे बन जायगा! वह तलवार लेकर भागा-भागा गया, पर रास्तेमें ही विचार आया कि मैंने यह नियम लिया है कि किसीका जी नहीं दुखाऊँगा, पर जी दुखाना तो दूर रहा, मैं तो गला ही काटने

जा रहा हूँ! उसको विचार हुआ कि यह काम मेरेसे नहीं होगा। उसमें सद्बुद्धि पैदा हो गयी। वह भागा-भागा पीछे आया। भगवान्‌ने पूछा—ले आया क्या? वह बोला—हाँ, ले आया हूँ। भगवान् बोले—कहाँ है? वह बोला—मेरे एक सिरमें चारों बातें हैं! मैं कभी किसीका जी नहीं दुखाता, सदा सत्य बोलता हूँ, नाम-जप करता हूँ और भगवान्‌के शरण हूँ। ये चारों बातें मेरेमें हैं; अतः मैं अपना ही सिर काटकर आपको देता हूँ। भगवान्‌ने कहा—बस, अब सिर काटनेकी जरूरत नहीं, मैं तेरेको दीक्षा देता हूँ! भगवान्‌ने उसको दीक्षा दी और वह अच्छा सन्त बन गया!

इस प्रकार चालाकीसे पाँच बातें धारण करनेसे भी चोरको भगवान् मिल गये और वह सन्त बन गया। अगर कोई सच्चे हृदयसे पाँचों बातोंको धारण कर ले तो फिर कहना ही क्या है!

७. सच्चा स्वाँग

एक राजा था। उसके पास एक बहुरूपिया आया। वह तरह-तरहके स्वाँग धारण किया करता था। उसमें देवीकी ऐसी शक्ति थी कि वह जो भी स्वाँग धारण करता, उसको पूरा वैसा-का-वैसा निभाता था। उसमें वह कहीं चूकता नहीं था। राजाने कहा कि तुम एक विरक्त, त्यागी महात्माका स्वाँग लाओ। बहुरूपियेने स्वीकार कर लिया। वह कुछ दिनोंतक गुप्त रूपसे रहा। जब दाढ़ी बढ़ गयी तो वह साधुका स्वाँग लेकर शहरमें आया। वह सबके साथ सन्तकी तरह ही बर्ताव करता। किसीसे

न राग रखता, न द्वेष। भिक्षामें जो मिल जाय, उसीमें सन्तोष करता। लोगोंको खूब अच्छी-अच्छी बातें सुनाता। शहरमें हल्ला मच गया कि बड़े विरक्त, त्यागी महात्मा आये हैं। राजाने मन्त्रीको भेजा कि जाकर देखो, वही बहुरूपिया है या कोई और सन्त है? मन्त्रीने जाकर देखा तो पहचान लिया कि यह तो वही बहुरूपिया है। राजाने घोषणा की कि हम सन्तके दर्शनको जायँगे। राजाने एक थालमें बहुत-सी अशर्फियाँ भर लीं और भेंट-पूजाका सामान लेकर बड़े ठाट-बाटसे वहाँ गया। मन्त्री तथा अन्य लोग भी साथमें थे। लोग कहने लगे कि ऐसे सन्तके दर्शनके लिये खुद राजा आये हैं! राजा उसके पास गया और अशर्फियोंसे भरा थाल उसके सामने रखा। सन्तने अशर्फी अथवा रुपया, कपड़ा आदि कुछ भी नहीं लिया और 'शिव-शिव' कहते हुए उठकर वहाँसे चल दिया। लोग कहने लगे कि अच्छा सत्संग होता था, पर राजाको पता नहीं क्या सूझी कि सत्संगमें बाधा लगा दी! राजाकी भेंट क्या काम आयी!

वह बहुरूपिया अपने असली रूपमें राजाके सामने आया और बोला कि अन्नदाता! इनाम मिल जाय। राजाने पूछा कि क्या तुम्हारे मनमें है कि मैं इतने रुपये इनाममें दूँगा? वह बोला कि आप अपनी मरजीसे जो देंगे, उसीमें मैं राजी हो जाऊँगा। राजा बोला— तू मूर्ख है! मैंने इतनी अशर्फियाँ तुम्हारे सामने रखीं, पर तुमने उनको छोड़ दिया! वह बोला—अन्नदाता! मैंने साधुका स्वाँग लिया था, फिर मैं वह काम कैसे कर सकता था, जिससे साधुके स्वाँगको बट्टा लग जाय! अगर मैं रुपयोंपर मोहित हो जाता तो मेरा स्वाँग बिगड़ जाता और भगवती माता भी नाराज हो जाती। राजा बहुत प्रसन्न हुआ कि यह बात तो

ठीक कहता है। राजाने उसको बहुत-सा इनाम दिया।

एक दिन राजाने बहुरूपियेसे कहा कि तुम सिंहका स्वाँग लाओ। वह बोला कि अन्नदाता! मैं स्वाँग पूरा करता हूँ, उसमें चूकता नहीं हूँ। इसलिये आप मेरेसे सिंहके स्वाँगके लिये न कहें। यह स्वाँग खतरनाक है! राजाने कहा कि हम तो सिंहका स्वाँग ही देखना चाहते हैं। बहुरूपियेने कहा—अगर कोई नुकसान हो जाय तो पहले ही मेरा गुनाह माफ कर दें, नहीं तो कोई दूसरा स्वाँग लानेकी आज्ञा दें। राजाने कहा—हम पहलेसे ही तुम्हारा गुनाह माफ करते हैं, तुम सिंहका स्वाँग लाओ। बहुरूपिया सिंहकी खाल पहनकर सिंहावलोकन करता हुआ, इधर-उधर देखता हुआ आया। वह आकर सिंहकी तरह बैठ गया। राजाका लड़का वहाँ खेल रहा था। वह खेलते-खेलते वहाँ आया और सिंह बने हुए बहुरूपियेको पीछेसे लकड़ी मार दी। सिंहने दहाड़ लगाते हुए चट उस लड़केको मार दिया! राजाको बड़ा दुःख हुआ कि यह कैसा स्वाँग है कि मेरा लड़का मर गया! दूसरे दिन बहुरूपिया रोता-रोता आया और बोला—अन्नदाता! आप क्षमा करें! मैंने पहले ही कह दिया था कि ऐसा खतरनाक स्वाँग मेरेसे मत मँगाओ। मेरा शक्ति माँका इष्ट है, अगर स्वाँग बिगाड़ दूँ तो माँ नाराज हो जाय। राजा बोला—तुम्हारा तो स्वाँग है, पर हमारा कितना नुकसान हो गया, राजकुमार मर गया! परन्तु अब राजा कर भी क्या सकता था! वह वचनबद्ध था। बहुरूपियेने पहले ही क्षमा माँग ली थी।

राजाके पास एक नाई रहता था। उस नाईने राजाको सलाह दी कि इस बहुरूपियेसे सतीका स्वाँग मँगाओ। सती पतिके पीछे जल जाती है। यह सतीका स्वाँग करेगा तो जलकर मर

जायगा और राजकुमारको मारनेका दण्ड इसको अपने-आप मिल जायगा! हमें दण्ड देना नहीं पड़ेगा। राजाने बहुरूपियेको बुलाकर कहा कि भाई, तुम सतीका स्वाँग लाओ। वह बोला कि ठीक है अन्नदाता, ले आऊँगा। शहरमें एक लावारिस मुर्दा पड़ा हुआ था। उसको देखकर बहुरूपियेने सतीका स्वाँग बनाया। सोलह सिंगार करके, ढोल आदि बजाते हुए वह मार्गसे चला। लोगोंने देखा कि कोई स्त्री सती होने जा रही है। राजाके पास समाचार पहुँचा तो मन्त्रीसे पता लगानेको कहा। मन्त्रीने पता लगाया कि यह वही बहुरूपिया है। राजाने अपने आदमियोंको भेजा कि इसको अच्छी तरहसे जलाना, जिससे यह बच न जाय। नदीके किनारे श्मशानघाट था। लोगोंने वहाँ बहुत ज्यादा लकड़ियाँ इकट्ठी कर दीं। वह सती बना हुआ बहुरूपिया मुर्देको गोदमें लेकर चितापर बैठ गया। लकड़ियोंमें आग लगा दी गयी। इतनेमें जोरसे आँधी और वर्षा आयी। आँधी और वर्षा आनेसे सब लोग भाग गये। घरका कोई आदमी हो तो ठहरे! घरका तो कोई था नहीं। वर्षासे आग बुझ गयी और नदीमें वेग आनेसे लकड़ियाँ बह गयीं। वह बहुरूपिया लकड़ियोंके ऊपर बैठा रहा और तैरता हुआ किनारे जा लगा। देवीका इष्ट होनेसे उसके प्राण बच गये।

कुछ महीने बीत गये तो वह बहुरूपिया राजाके पास आया और बोला कि अन्नदाता! इनाम मिल जाय! राजा उसको देखकर चकरा गया और बोला—'अरे! तू तो जलकर मर गया था न?' वह बोला—'मर तो गया था, पर शक्ति माँकी कृपासे पीछे आ गया हूँ'। राजा बोला—'क्या तू हमारे बाप-दादा-परदादासे मिला?' वह बोला—'हाँ अन्नदाता! सबसे मिलकर आया हूँ।' राजा बोला—'उनका समाचार क्या लाया है?'

बहुरूपिया बोला—'समाचार तो खुशीका है, पर उन सबकी हजामत और नाखून बहुत बढ़े हुए हैं, इसलिये उन्होंने घरके नाईको बुलाया है।' राजा बोला—'नाई वहाँ जायगा कैसे?' बहुरूपिया बोला—'जैसे बाप-दादा गये, मैं गया, ऐसे ही जायगा; क्योंकि जानेका रास्ता तो एक ही है!' नाईने सुना तो सोचा कि अब मेरी मौत आयी! राजाकी आज्ञा हो जाय तो फिर कौन रक्षा करनेवाला है? नाई जाकर बहुरूपियेके पैर पड़ा कि तू किसी तरह मेरेको बचा, मेरा घर बर्बाद हो जायगा! घरमें कोई कमानेवाला नहीं है! बहुरूपिया बोला कि सतीका स्वाँग लानेके लिये तूने ही राजाको सलाह दी थी, अब तू भी जा! नाई बहुत गिड़गिड़ाया तो बहुरूपियेने कहा कि अच्छी बात है, मेरा तुमसे कोई वैर तो है नहीं! उसने जाकर राजासे कहा—'अन्नदाता! वास्तवमें मैं मरा नहीं था। मेरे लिये लकड़ियाँ बहुत ज्यादा इकट्ठी की गयी थीं। अतः लकड़ियाँ जलते-जलते मेरे नजदीक आयें—इससे पहले ही आँधी और वर्षा आ गयी। लोग भाग गये और माँकी कृपासे मैं बच गया। मैंने सतीका स्वाँग किया तो जलनेसे मैं डरता नहीं हूँ। आप जो भी स्वाँग कहेंगे, मैं वैसा-का-वैसा स्वाँग लाऊँगा, स्वाँग नहीं बिगाड़ूँगा। पीछे आप जो इनाम दें, मैं प्रसन्नतापूर्वक ले लूँगा।'

तात्पर्य है कि मनुष्यको अपना स्वाँग नहीं बिगाड़ना चाहिये। पिताका, माँका, पुत्रका, भाईका, बहनका, बेटीका, सासका, बहूका, जो भी स्वाँग धारण किया है, उसको ठीक तरहसे निभाना चाहिये। जो अपने कर्तव्यका ठीक पालन करता है, उसपर भगवान् कृपा करते हैं।

८. महलमें कमी

एक राजा था। वह एक सन्तके पास जाया करता और उनका सत्संग किया करता था। उस राजाने अपने लिये एक महल बनाया। पहले उसके कई महल थे, पर अब ऐसा महल बनाया, जिसमें आरामकी सब चीजें हों और उसमें ज्यादा ठाट-बाटसे रहें। राजाने सन्तसे कहा कि महाराज! एक दिन आप चलो, हमारी कुटिया पवित्र हो जाय! सन्त उसको टालते गये। राजाने बहुत बार कहा तो एक दिन सन्त बोले कि अच्छा भाई, चलो।

राजाने सन्तको महल दिखाना आरम्भ किया कि यह हमारे रहनेकी जगह है, यह हमारे पंचायतीकी जगह है, यह भोजनकी जगह है, यह शौच-स्नानकी जगह है, आदि-आदि। सन्त चुपचाप देखते रहे, कुछ बोले नहीं। अगर वाह-वाह करते हैं तो हिंसा लगती है। कारण कि मकान बनानेमें बड़ी हिंसा होती है! बहुत-से जीव मरते हैं। चूहे, साँप, गिलहरी आदिके रहने और चलने-फिरनेमें आड़ लग जाती है; क्योंकि जितने हिस्सेमें मकान बना है, उतने हिस्सेमें वे जा नहीं सकते, स्वतन्त्रतासे घूम नहीं सकते। पहले उतने हिस्सेमें सब जीवोंका हक लगता था, पर अब केवल एकका ही हक लगता है। सन्त कुछ बोले नहीं तो राजाने समझा कि महाराजको मकान पसन्द नहीं आया। राजालोग चतुर होते हैं। राजाने पूछ लिया कि महाराज! महलमें कमी क्या है? सन्त बोले कि कमी

तो इसमें बड़ी भारी है! राजाने विचार किया कि बड़े-बड़े कुशल कारीगरोंने महल बनाया है। उन्होंने कोई कमी बाकी नहीं छोड़ी। जहाँ कमी दीखी, उसको पूरा कर दिया। परन्तु बाबाजी कहते हैं कि कमी है, और वह भी मामूली नहीं है, बड़ी भारी कमी है! राजाको बड़ा आश्चर्य आया और पूछा कि क्या बहुत बड़ी कमी है? सन्त बोले कि हाँ, बहुत बड़ी कमी है! राजाने पूछा कि महाराज! क्या कमी है? सन्त बोले कि यह जो दरवाजा रख दिया है न, यह कमी है! राजा बोला कि महाराज! दरवाजेके बिना महल क्या काम आये? सन्त बोले कि तुमने यह महल क्यों बनवाया है? राजाने कहा कि महाराज! मैंने अपने रहनेके लिये बनाया है। सन्त बोले कि राजन्! तुमने तो रहनेके लिये बनाया है, पर एक दिन लोग उठाकर ले जायँगे! इससे ज्यादा कमी और क्या होगी, बताओ? बनाया तो है रहनेके लिये, पर लोग उठाकर बाहर ले जायँगे, रहने देंगे नहीं! इसलिये अगर रहना ही हो तो यह दरवाजा नहीं होना चाहिये, बाहर निकलनेकी जगह नहीं होनी चाहिये।

तात्पर्य है कि यह अपना असली घर नहीं है। एक दिन सब कुछ छोड़कर यहाँसे जाना पड़ेगा। हमारा असली घर तो वह है, जहाँ पहुँचनेपर फिर लौटकर आना ही न पड़े—**'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'** (गीता १५।६)।

९. हीरेका मूल्य

एक बुद्धिमान् जौहरी था। अपने काममें वह बड़ा तेज था। दैवयोगसे युवावस्थामें ही वह मर गया। पीछे उसकी स्त्री तथा गोदमें एक बालक रह गया। लोगोंने उनके पैसे दबा लिये। धन नष्ट हो गया। उस स्त्रीके पास एक हीरा था, जो उसको जौहरीने दिया था। वह हीरा बहुत कीमती था। जब उसका बालक पन्द्रह-बीस वर्षका हो गया, तब उसने बालकसे कहा कि बेटा! देखो, तुम्हारे पिताजीने यह हीरा दिया था। उन्होंने इसका मूल्य नहीं बताया, प्रत्युत इसको अमूल्य बताया है। इसका मूल्य कोई करेगा तो उसकी बुद्धिका मूल्य होगा, हीरेका मूल्य नहीं होगा अर्थात् जैसी उसकी बुद्धि होगी, वैसी ही वह कीमत करेगा। इस हीरेको लेकर तुम जाओ और इसका मूल्य करा लाओ, पर हरेक जगह इसको देना नहीं!

वह लड़का हीरा लेकर बाजार गया। पहले वह एक सब्जी बेचनेवालीके पास गया और हीरा दिखाकर पूछा कि इसका क्या मूल्य दोगी? वह बोली कि दो मूली ले लो, बच्चोंके खेलनेके लिये अच्छी चीज है! वह लड़का बोला कि देना नहीं है। आगे जाकर कइयोंसे पूछा तो किसीने दो रुपये कहे, किसीने तीन रुपये कहे। आगे एक सुनारके पास गया तो उसकी कीमत दस, बीस, पचास रुपयेतक लग गयी। आगे जौहरीके पास गया तो पाँच सौ, सात सौ, एक हजार रुपयेतक कीमत हो गयी। वह लड़का ज्यों-ज्यों अच्छे जानकार आदमीके पास गया, त्यों-त्यों उसकी कीमत बढ़ती चली गयी। वह हीरेके एक अच्छे परीक्षकके पास गया तो उसने उसका मूल्य एक लाख

रुपयेतक बताया। लड़केको बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह हीरा बड़ा विचित्र है! लोगोंसे पूछते-पूछते वह एक बहुत बूढ़े जौहरीके पास पहुँचा, जो बड़ा ईमानदार और हीरेका अच्छा परीक्षक था। उसको हीरा दिखाया तो उसने लड़केकी तरफ देखा और कहा—अरे! यह हीरा तेरे पास कहाँसे आया? लड़केने कहा—मेरे पिताजीने दिया था।

'तुम्हारे पिताजी कौन?'

'अमुक नामके हीरेके व्यापारी थे।'

'उनका नाम तो हमने पहले भी सुना था, अब बहुत दिनोंसे उनके बारेमें सुना नहीं, क्या बात है?'

'उनका शरीर शान्त हो गया।'

'अहो! वे तो बड़े नामी परीक्षक थे!'

'मैं उनका ही बेटा हूँ। इस हीरेकी क्या कीमत दोगे?'

'इसकी कीमत नहीं है, यह अमूल्य हीरा है! मेरे पास जितना धन है, वह सब-का-सब देनेपर भी इसकी पूरी कीमत नहीं होगी!'

'पर हम क्या करें? हमारेको तो रोटीकी तंगी हो रही है!'

'भाई, यह तो तुम जानो। मैं हीरेकी कीमत कैसे कह दूँ? इसकी कीमत कहनेसे तो इसका तिरस्कार होगा, अपमान होगा! हाँ, एक बात है, तू जितना लेगा, उतना हम तुम्हारेको दे देंगे।'

'वह कैसे?'

बूढ़े जौहरीने कहा—हमारी तीन दूकानें हैं। पहली दूकानमें हम तुम्हारेको पन्द्रह मिनट देंगे। पन्द्रह मिनटके भीतर तुम दूकानमेंसे जितनी वस्तुएँ बाहर निकाल दोगे, वे सब तुम्हारी

हो जायँगी। वस्तु लेनेवाले और रखनेवाले सब तैयार रहेंगे। तुम केवल भीतरसे वस्तु फेंक दो। पन्द्रह मिनट पूरे होनेपर फिर तुम उसमें नहीं रह सकोगे। लड़केने कहा कि अच्छी बात है!

लड़केको दूकान दिखायी गयी। वह दूकानके भीतर गया तो देखा कि दूकान बहुत सजी हुई है। उसमें लाखों रुपयेका एक-एक हीरा रखा हुआ है। कई बक्से पड़े हुए हैं, जो चमक रहे हैं। हीरा तो दूर रहा, उसने उम्रमें ऐसा बक्सा भी नहीं देखा था। वह देखकर बहुत चकरा गया। उसके साथ एक आदमी था, जो घड़ीमें समय देख रहा था। उसने कहा कि देखो, पाँच मिनट हो गये हैं। लड़का बोला कि ठहर-ठहर, हल्ला मत कर! पन्द्रह मिनट होनेपर तो यहाँ रहने देंगे नहीं, इसलिये अच्छी तरहसे देख लूँ। देखते-देखते पन्द्रह मिनट हो गये तो वह आदमी बोला कि बस, समय पूरा हो गया है, अब बाहर निकलो। अब इसमें कोई वस्तु छू भी नहीं सकते, एक दाना भी ले नहीं सकते। लड़का बाहर निकल गया।

बूढ़े जौहरीने दूसरी दूकान दिखायी और कहा कि इसमें तुम्हारेको पचीस मिनट ठहरने दिया जायगा। इस बीच तुम जो माल बाहर फेंक दोगे, वह सब तुम्हारा हो जायगा। लड़का उस दूकानके भीतर गया। उसमें पहली दूकानसे भी बहुत विलक्षण सजावट थी। उसको देखकर वह चकरा गया कि यह तो कोई अजायबघर है! कितनी विलक्षण चीजें हैं! लड़केने पूछा कि क्या दूकान आगे और लम्बी है? वह आदमी बोला कि हाँ, आगे दूकान बहुत लम्बी तथा ज्यादा सुन्दर है। लड़का ज्यों-

ज्यों आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों अधिक सुन्दरता दीखती गयी! साथमें जो आदमी था, वह समय बताता रहा कि अब पाँच मिनट हो गये, अब दस मिनट हो गये! पर लड़केने सोचा कि अभी तो देख लें, फिर पीछे रहने नहीं देंगे। इस प्रकार देखते-देखते पचीस मिनट हो गये तो आदमीने कहा कि अब निकलो बाहर! अब कोई वस्तु छू भी नहीं सकते।

अब लड़केको तीसरी दूकान दिखायी और कहा कि इसमें तुम्हारेको साठ मिनट (एक घण्टे)-का समय दिया जायगा। पहली दूकानमें वस्तुएँ तो ज्यादा कीमती थीं, पर सजावट कम थी। दूसरी दूकानमें सजावट तो बहुत ज्यादा थी, पर वस्तुएँ कम कीमती थीं। तीसरी दूकान तो कोसोंतक फैली हुई थी। उसमें खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने आदिकी सैकड़ों वस्तुएँ थीं। कार, स्कूटर, साइकिल आदि तरह-तरहकी सवारियाँ थीं। तरह-तरहका नाच-गान हो रहा था। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध—इन पाँचों विषयोंकी तरह-तरहकी चीजें वहाँ मौजूद थीं। वह लड़का उन चीजोंमें ही मस्त हो गया। वह कभी मोटरपर चढ़ता है, कभी बग्घीपर चढ़ता है, कभी झूला झूलता है, कभी नाटक देखता है, कभी सिनेमा देखता है। उसने वहाँ ऐसी चीजें देखीं, जो पहले कभी देखी नहीं थीं, कभी सुनी नहीं थीं। साथवाले आदमीने कहा कि देखो, पहली दूकान गयी, दूसरी दूकान भी गयी और अब तीसरी दूकान भी जा रही है! अब समय बहुत थोड़ा बचा है। अब जल्दी पीछे लौटो! उस दूकानसे निकलते-निकलते समय पूरा हो गया! दूकानसे निकलते समय उसने वहाँ रखा एक टाटका थैला उठा लिया। दूकानसे बाहर आकर देखा तो थैलेमें खोटे सिक्के,

लोहेके बाट, पत्थर आदि पड़े थे!

बूढ़े मालिकने अपने आदमियोंसे कह रखा था कि वह जितनी वस्तुएँ ले, उसकी खबर मेरेको करते रहना। अन्तमें आदमियोंने खबर कर दी कि उसने कुछ नहीं लिया। मालिकने कहा कि उसको निकालो यहाँसे! उसका मुँह मेरेको मत दिखाओ! किसी कामका आदमी नहीं है। लड़का बेचारा खाली हाथ वहाँसे चला गया!

जो भाई-बहन यह कहानी पढ़ रहे हैं, उनके मनमें आती होगी कि हमारेको वह दूकान मिले तो हम आँखें मीचकर बढ़िया-बढ़िया माल बाहर फेंक दें! परन्तु वास्तवमें हमारा मनुष्यजीवन ही वह दूकान है! हमारे जीवनके प्रथम पन्द्रह वर्ष पहली दूकान है, पचीस वर्ष दूसरी दूकान है और अन्तिम साठ वर्ष तीसरी दूकान है। जीवनके प्रथम पन्द्रह वर्ष खेल-कूदमें बीत जाते हैं। उसके बादके पचीस वर्ष 'गदहपचीसी' के होते हैं, जिसमें मनुष्य स्त्री और धनके चक्करमें फँस जाता है। भजन करनेके लिये उसको समय ही नहीं मिलता। अगर वह भजन-साधन करे तो यही पचीस वर्ष 'साधन-पचीसी' हो जाते हैं। जो इन पचीस वर्षोंमें साधन नहीं करता, वह वृद्धावस्थामें भी साधन नहीं कर पाता। चालीस वर्षकी अवस्था आनेके बाद लड़के-लड़कियोंके विवाहकी चिन्ता सताने लगती है। उनका विवाह होनेके बाद परिवार बढ़ जाता है। पारिवारिक जिम्मेवारियाँ बढ़ जाती हैं। शरीरकी शक्ति कम हो जाती है। फिर भजन करनेका समय कहाँसे मिले? इस प्रकार सांसारिक चकाचौंधमें फँसकर मनुष्य अपना अमूल्य जीवन गँवा देता है!

१०. इन्द्रकी पोशाक

एक सीधे-सरल स्वभावके राजा थे। उनके पास एक आदमी आया, जो बहुत होशियार था। उसने राजासे कहा कि अन्नदाता! आप देशकी पोशाक पहनते हो। परन्तु आप राजा हो, आपको तो इन्द्रकी पोशाक पहननी चाहिये। राजा बोला— इन्द्रकी पोशाक? वह आदमी बोला—'हाँ, आप स्वीकार करो तो हम लाकर दे दें!' राजा बोला—'अच्छा, ले आओ। हम इन्द्रकी पोशाक पहनेंगे!' वह आदमी बोला—'पहले आप एक लाख रुपये दे दें, बाकी रुपये बादमें लेंगे। आप रुपये देंगे, तभी इन्द्रकी पोशाक आयेगी।' राजाने रुपये दे दिये।

दूसरे दिन वह आदमी एक बहुत बढ़िया चमचमाता हुआ बक्सा लेकर आया और सभाके बीचमें रख दिया। वह बोला— 'देखिये अन्नदाता! यह इन्द्रकी पोशाक है। यह हरेक मनुष्यको दीखती नहीं! जो असली माँ-बापका होगा, उसको तो यह दीखेगी, पर कोई दूसरा बाप होगा तो उसको यह नहीं दीखेगी।' अब उस आदमीने उस बक्सेमेंसे इन्द्रकी पोशाक निकालनेका अभिनय शुरू किया और कहने लगा कि यह देखो, यह पगड़ी कैसी बढ़िया है! यह देखो, धोती कैसी बढ़िया है! लोग कहने लगे कि हाँ-हाँ, बहुत बढ़िया है! वास्तवमें किसीको भी पोशाक दीखी नहीं। पोशाक थी ही नहीं, फिर दीखे कैसे? पर कोई कुछ बोला नहीं; क्योंकि अगर यह बोलते हैं कि पोशाक नहीं दीखती तो दूसरे सोचेंगे कि ये असली माँ-बापके नहीं हैं। कइयोंको यह वहम हो गया कि शायद हम असली माँ-बापके न हों; क्योंकि हमारेको इसका क्या पता? पर दूसरेको तो

दीखती ही होगी! इस तरह सबने हाँ-में-हाँ मिला दी। राजा भी चुप रहे। अब उस आदमीने राजाको इन्द्रकी पोशाक पहनानी शुरू की कि पहली धोती उतारकर यह धोती पहनो, यह कुरता पहनो, यह पगड़ी बाँधो आदि-आदि। परिणाम यह हुआ कि राजा जैसे जन्मे थे, वैसे (निर्वस्त्र) हो गये! उसी अवस्थामें राजा रनिवासमें चले गये। रानियोंने राजाको देखा तो कहा कि आज भाँग पी ली है क्या? कपड़े कहाँ उतार दिये? राजा बोला—तुम असली माँ-बापकी नहीं हो, इसलिये तुम्हें दीखता नहीं है। यह इन्द्रकी पोशाक है! रानियोंने कहा—अन्नदाता! आप भले ही इन्द्रकी पोशाक पहनो, पर कम-से-कम धोती तो अपने ही देशकी पहनो!

११. असली गहना

एक 'चक्कवेण' नामके राजा थे। वे बड़े धर्मात्मा थे। राजा और रानी दोनों खेती करते थे और खेतीसे जितना उपार्जन हो जाय, उससे अपना निर्वाह करते थे। राज्यके धनको वे अपने काममें नहीं लेते थे। प्रजासे जो कर लेते थे, उसको प्रजाके हितमें ही खर्च करते थे। राजा होते हुए भी वे साधारण मोटा कपड़ा पहनते थे और भोजन भी साधारण ही करते थे।

एक दिन नगरमें कोई उत्सव हुआ। नगरकी स्त्रियाँ रानीके पास आयीं। उन स्त्रियोंने बढ़िया-बढ़िया रेशमी वस्त्र तथा हीरे-पन्नेसे जड़े हुए सोनेके गहने पहन रखे थे। उन्होंने रानीको देखा तो कहा कि आप हमारी मालकिन हो, आपके तो हमारेसे भी बढ़िया गहने-कपड़े होने चाहिये, पर आपने तो साधारण

वस्त्र पहन रखे हैं! रानीके कोमल हृदयमें उनकी बात लग गयी। रात्रिमें उसने राजासे कहा कि आज मेरी बड़ी फजीती हुई! हमारी प्रजाकी स्त्रियोंके तो ऐसे-ऐसे बढ़िया कपड़े और गहने हैं और हम उनके मालिक हैं, हमारी यह दशा! राजाने कहा कि देखो, हम खेती करते हैं। उससे जितना पैदा होता है, उतना खर्च हो जाता है। ज्यादा पैदा होता नहीं तो अब क्या करें? प्रजासे आया हुआ धन हम अपने काममें लेते नहीं। फिर भी हम तुम्हारे लिये गहनोंका प्रबन्ध कर देंगे, तुम धैर्य रखो।

दूसरे दिन चक्कवेणने अपने एक आदमीसे कहा कि तुम लंकापति रावणके पास जाओ और उससे कहो कि चक्कवेणने आपसे कर माँगा है। उससे कर-रूपमें सोना लेकर आओ। वह आदमी लंकामें रावणके पास पहुँचा। रावणने पूछा कि कैसे आये हो? वह बोला कि मेरेको महाराज चक्कवेणने आपसे कर लेनेके लिये भेजा है। रावण जोरसे हँसा और बोला कि देखो, आज भी संसारमें ऐसे मूर्ख आदमी जी रहे हैं, जो रावणसे कर माँगते हैं! अक्ल कहाँ चली गयी? क्या रावण कर देगा? वह आदमी बोला कि आपको अब कर देना पड़ेगा, आप दे दो तो अच्छी बात है। रावणने तिरस्कारपूर्वक कहा कि मेरे सामने ऐसी बात कहनेकी तुम्हारी हिम्मत कैसे हो गयी? चला जा यहाँसे!

रातमें रावण मन्दोदरीसे मिला तो उससे कहा कि ऐसे-ऐसे मूर्ख हैं संसारमें! आज चक्कवेणका एक आदमी आया था और मेरेसे कर-रूपमें सोना माँग रहा था! मन्दोदरी बोली कि आपने कर दिया कि नहीं? रावणने कहा कि तू भी ऐसी बात

कहती है! तू पगली है, समझती नहीं। तू मेरी महिमा जानती है कि नहीं? मैं रावण हूँ! क्या रावण कर दिया करता है? मन्दोदरी बोली कि महाराज! आप कृपा करके कर दे दो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। आपको कर जरूर देना चाहिये। मन्दोदरी राजा चक्कवेणके प्रभावको जानती थी; क्योंकि वह पतिव्रता थी। पातिव्रतके प्रभावसे वह इतना जानती थी, जितना रावण भी नहीं जानता था। सुबह रावण उठकर जाने लगा तो मन्दोदरीने उसको रोक लिया और कहा कि आप थोड़ी देर ठहरो मैं आपको एक तमाशा दिखाऊँगी। रावण ठहर गया। मन्दोदरी रोज़ाना छतपर कबूतरोंको दाना डाला करती थी। दाना डालनेके बाद जब कबूतर दाना चुग रहे थे, तब मन्दोदरीने उनसे कहा कि 'अगर एक भी दाना चुगा तो महाराजाधिराज रावणकी दुहाई (सौगन्ध) है!' कबूतरोंपर इस बातका कुछ भी असर नहीं हुआ और वे ज्यों-के-त्यों दाना चुगते रहे। मन्दोदरीने कहा कि देख लिया आपका प्रभाव? रावण बोला कि कैसी पागल है! पक्षी क्या समझें कि रावण क्या है? मन्दोदरी बोली कि अब दिखाती हूँ आपको! उसने कहा कि 'अगर एक भी दाना चुगा तो महाराज चक्कवेणकी दुहाई है।' मन्दोदरीद्वारा ऐसा कहते ही कबूतरोंने दाना चुगना छोड़ दिया! केवल एक कबूतरीने दाना चुगा तो चुगते ही उसका सिर कट गया। कारण कि बहरी होनेके कारण उस कबूतरीने मन्दोदरीकी बात नहीं सुनी। रावण बोला कि यह तो तेरा कोई जादू है, मैं नहीं मानता इस बातको! रावण वहाँसे चला गया।

रावण राजगद्दीपर जाकर बैठा। राजा चक्कवेणका आदमी पुनः वहाँ आया और बोला कि रातमें आपने विचार किया

कि नहीं? आपको कर-रूपमें सोना देना पड़ेगा। रावण हँसकर बोला कि कैसे आदमी हो तुम? देवता हमारे यहाँ पानी भरते हैं, हम कर देंगे? वह आदमी बोला कि अच्छा, आप मेरे साथ समुद्रके किनारे चलें। रावणको भय तो था नहीं, वह उसके साथ समुद्रके किनारे चला गया। उस आदमीने समुद्रके किनारे बालूसे लंकाकी आकृति बना दी। लंकाके जैसे चार दरवाजे थे, वैसे चार दरवाजे बना दिये। उसने पूछा कि लंका ऐसी ही है न? रावण बोला कि हाँ, ऐसी ही है! तुम तो बड़े कारीगर हो! वह आदमी बोला कि अब आप ध्यानसे देखें। 'महाराज चक्कवेणकी दुहाई है'—ऐसा कहकर उसने अपना हाथ मारा और एक दरवाजेको गिरा दिया। इधर बालूसे बनी लंकाका एक हिस्सा बिखरा तो उधर असली लंकाका भी वही हिस्सा बिखर गया! अब वह आदमी रावणसे बोला कि कर देते हो कि नहीं? नहीं तो मैं अभी हाथ मारकर सारी लंका बिखेरता हूँ! रावण डर गया और बोला कि हल्ला मत कर, तेरेको जितना चाहिये, लेकर चुपचाप चला जा! रावणने उसको ले जाकर कर-रूपमें बहुत-सा सोना दे दिया।

रावणसे कर लेकर वह आदमी राजा चक्कवेणके पास पहुँचा और उनके सामने सब सोना रख दिया। चक्कवेणने वह सोना रानीके सामने रख दिया कि जितने चाहिये, उतने गहने बनवा लो। रानीने पूछा कि इतना सोना कहाँसे लाये? चक्कवेणने कहा कि यह रावणके यहाँसे कर-रूपमें मिला है। रानीको बड़ा भारी आश्चर्य हुआ कि रावणने कर कैसे दे दिया! उसने कर लानेवाले आदमीको बुलाया और उससे सारी बात पूछी कि कर कैसे लाये? उसने सारी कथा सुना दी। कथा सुनकर

रानी चकरा गयी और बोली कि मेरा असली गहना तो मेरे पतिदेव हैं! दूसरा गहना मेरेको नहीं चाहिये। गहनोंकी शोभा पतिके कारण ही है। पतिके बिना गहनोंकी क्या शोभा? जिनका इतना प्रभाव है कि रावण भी भयभीत होता है, उनसे बढ़कर गहना और कोई हो नहीं सकता। रानीने उस आदमीसे कहा कि 'जाओ, रावणको यह सब सोना लौटा दो और कहो कि महाराज चक्कवेण तुम्हारा कर स्वीकार नहीं करते।'

१२. कंजूसीका परिणाम

एक गरीब ब्राह्मण था। उसको अपनी कन्याका विवाह करना था। उसने विचार किया कि कथा करनेसे कुछ पैसा आ जायगा तो काम चल जायगा। ऐसा विचार करके उसने भगवान् रामके एक मन्दिरमें बैठकर कथा आरम्भ कर दी। उसका भाव यह था कि कोई श्रोता आये, चाहे न आये, पर भगवान् तो मेरी कथा सुनेंगे ही!

पण्डितजीकी कथामें थोड़े-से श्रोता आने लगे। एक बहुत कंजूस सेठ था। एक दिन वह मन्दिरमें आया। जब वह मन्दिरकी परिक्रमा कर रहा था, तब उसको मन्दिरके भीतरसे कुछ आवाज आयी। ऐसा लगा कि कोई दो व्यक्ति आपसमें बात कर रहे हैं। सेठने कान लगाकर सुना। भगवान् राम हनुमान्‌जीसे कह रहे थे कि इस गरीब ब्राह्मणके लिये सौ रुपयोंका प्रबन्ध कर देना, जिससे कन्यादान ठीक हो जाय। हनुमान्‌जीने कहा कि ठीक है महाराज! इसके सौ रुपये पैदा हो जायँगे। सेठने यह सुना तो वे कथा समाप्तिके बाद पण्डितजीसे मिले और उनसे

कहा कि महाराज! कथामें रुपये पैदा हो रहे हैं कि नहीं? पण्डितजी बोले कि श्रोतालोग बहुत कम आते हैं, रुपये कैसे पैदा हों? सेठने कहा कि मेरी एक शर्त है, कथामें जितना रुपया आये, वह मेरेको दे देना, मैं आपको पचास रुपये दे दूँगा। पण्डितजीने शर्त स्वीकार कर ली। उसने सोचा कि कथामें इतने रुपये तो आयेंगे नहीं, पर सेठजीसे पचास रुपये तो मिल ही जायँगे! पुराने जमानेमें पचास रुपये भी बहुत ज्यादा होते थे। इधर सेठकी नीयत यह थी कि हनुमान्‌जी भगवान्‌की आज्ञाका पालन करके इसको सौ रुपये जरूर दिलायेंगे। वे सौ रुपये मेरेको मिल जायँगे और पचास रुपये मैं दे दूँगा तो बाकी पचास रुपये मेरे पैदा हो जायँगे! जो लोभी आदमी होते हैं, वे सदा रुपयोंकी ही बात सोचते हैं। इसलिये भगवान् और हनुमान्‌जीकी बातें सुनकर भी सेठमें भगवान्‌के प्रति भक्ति उत्पन्न नहीं हुई, उलटे उसने लोभको ही पकड़ा!

कथाकी पूर्णाहुति होनेपर सेठ पण्डितजीके पास आया। उसको आशा थी कि आज सौ रुपये भेंटमें आये होंगे। पण्डितजीने कहा कि भाई, आज तो भेंट बहुत थोड़ी ही आयी! बस, पाँच-सात रुपये आये हैं। सेठ बेचारा क्या करे? उसने अपने वायदेके अनुसार पण्डितजीको पचास रुपये दे दिये। लेनेके बदले देने पड़ गये! सेठको हनुमान्‌जीपर बहुत गुस्सा आया कि उन्होंने पण्डितजीको सौ रुपये नहीं दिये और भगवान्‌के सामने झूठ बोला! वह मन्दिरमें गया और हनुमान्‌जीकी मूर्तिपर घूँसा मारा। घूँसा मारते ही सेठका हाथ मूर्तिसे चिपक गया! अब सेठने बहुत जोर लगाया, पर हाथ छूटा नहीं। जिसको हनुमान्‌जी पकड़ लें, वह कैसे छूट सकता है? सेठको फिर

आवाज सुनायी दी। उसने ध्यानसे सुना। भगवान् हनुमान्‌जीसे पूछ रहे थे कि तुमने ब्राह्मणको सौ रुपये दिलाये कि नहीं? हनुमान्‌जीने कहा कि 'महाराज! पचास रुपये तो दिला दिये हैं, बाकी पचास रुपयोंके लिये सेठको पकड़ रखा है! वह पचास रुपये देगा तो छोड़ देंगे।' सेठने सुना तो विचार किया कि मन्दिरमें लोग आकर मेरेको देखेंगे तो बड़ी बेइज्जती होगी! वह चिल्लाकर बोला कि 'हनुमान्‌जी महाराज! मेरेको छोड़ दो, मैं पचास रुपये दूँगा!' हनुमान्‌जीने सेठका हाथ छोड़ दिया। सेठने जाकर पण्डितजीको पचास रुपये दे दिये।

१३. जब साधु राजा बना

एक साधु था। चलते-चलते वह एक शहरके पास पहुँचा तो शहरका दरवाजा बन्द हो गया। रात हो गयी थी। वह साधु दरवाजेके बाहर ही सो गया। दैवयोगसे उस दिन उस शहरके राजाका शरीर शान्त हो गया था। उसका कोई बेटा नहीं था। राज्य पानेके लिये कुटुम्बी लड़ने लगे। एक कहता कि मेरा हक लगता है, दूसरा कहता कि मेरा हक लगता है। अन्तमें सबने मिलकर यह निर्णय किया कि कल सुबह दरवाजा खोलनेपर जो सबसे पहले भीतर आये, उसीको राज्य दे दिया जाय। ऐसा निर्णय होनेसे विवाद मिट गया।

सुबह होते ही शहरका दरवाजा खुला तो सबसे पहले वह साधु भीतर गया। भीतर जाते ही हथिनीने चट सूँड़से उठाकर बाबाजीको अपने ऊपर चढ़ा लिया। लोग जय-जयकार करते हुए बाबाजीको दरबारमें ले गये। बाबाजीने पूछा कि

'यह क्या तमाशा है भाई?' उन्होंने बाबाजीसे कहा कि 'महाराज! हमने विचार कर लिया है कि शहरमें जो सबसे पहले आ जाय, उसको राज्य दे देना है। सबसे पहले आप आये, इसलिये हमने आपको यहाँका राजा बनाया है।' बाबाजीने कहा कि 'अच्छी बात है!' बाबाजीने नहा-धोकर राजाकी पोशाक पहन ली और आज्ञा दी कि एक बक्सा लाओ! जब बक्सा आया तो बाबाजीने अपने पहलेके कपड़े, तूँबी, खड़ाऊँ आदि रखकर ताला लगा दिया और चाबी अपने पासमें रख ली। अब बाबाजी बढ़िया रीतिसे राज्य करने लगे।

बाबाजीमें न तो अपनी कोई कामना थी, न कोई चिन्ता थी और न उनको कोई भोग ही भोगना था। उन्होंने भगवान्‌का काम समझकर खूब बढ़िया रीतिसे राज्य किया। फलस्वरूप राज्यकी बहुत उन्नति हो गयी। आमदनी बहुत ज्यादा हो गयी। राज्यका खजाना भर गया। प्रजा सुखी हो गयी। राज्यकी समृद्धिको देखकर पड़ोसके एक राजाने विचार किया कि बाबाजी राज्य तो करना जानते हैं, पर लड़ाई करना नहीं जानते! उसने चढ़ाई कर दी। राज्यके सैनिकोंने बाबाजीको समाचार दिया कि अमुक राजाने चढ़ाई कर दी है। बाबाजी बोले कि 'करने दो, अपने लड़ाई नहीं करनी है।' थोड़ी देरमें समाचार आया कि शत्रुकी सेना नजदीक आ रही है। बाबाजी बोले कि 'आने दो'। फिर समाचार आया कि शत्रुकी सेना पासमें आ गयी है तो बाबाजीने आदमी भेजा कि आप यहाँ क्यों आये हैं? पड़ोसी राजाने समाचार भेजा कि हम यह राज्य लेने आये हैं। बाबाजीने कहा कि राज्य पानेके लिये लड़नेकी जरूरत नहीं है। बाबाजीने आज्ञा दी कि मेरा बक्सा लाओ। बक्सा

मँगाकर उन्होंने उसको खोला और अपने पहलेके कपड़े पहनकर हाथमें तूँबी ले ली। बाबाजीने पड़ोसी राजासे कहा कि इतने दिन मैंने रोटी खायी, अब आप खाओ! मैं तो इसलिये बैठा था कि राज्य सँभालनेवाला कोई नहीं था। अब आप आ गये तो इसको सँभालो। व्यर्थमें लड़ाई करके मनुष्योंको क्यों मारें?

इस कहानीका तात्पर्य यह नहीं है कि शत्रुकी सेना आये तो उसको राज्य दे दो, प्रत्युत यह तात्पर्य है कि बाबाजीकी तरह जो काम सामने आ जाय, उसको भगवान्‌का काम समझ-कर निष्कामभावसे बढ़िया रीतिसे करो, अपना कोई आग्रह मत रखो।

१४. दूसरेका कल्याण कौन कर सकता है?

एक राजा था। उसने सुना कि राजा परीक्षित्‌ने भागवतकी कथा सुनी तो उनका कल्याण हो गया। राजाके मनमें आया कि अगर मैं भी भागवतकी कथा सुन लूँ तो मेरा भी कल्याण हो जायगा। ऐसा विचार करके राजाने एक पण्डितजीसे बात की। पण्डितजी भागवत सुनानेके लिये तैयार हो गये। निश्चित समयपर भागवत-कथा आरम्भ हुई। सात दिन बीतनेपर कथा समाप्त हुई।

दूसरे दिन राजाने पण्डितजीको बुलाया और कहा कि पण्डितजी! न तो आपने भागवत सुनानेमें कोई कमी रखी, न मैंने सुननेमें कोई कमी रखी, फिर भागवत सुननेपर कोई फर्क तो पड़ा नहीं, बात क्या है? पण्डितजीने कहा कि

महाराज! इसका उत्तर तो मेरे गुरुजी ही दे सकते हैं। राजाने कहा कि आप अपने गुरुजीको आदरपूर्वक यहाँ लेकर आयें, हम उनसे पूछेंगे। पण्डितजी अपने गुरुजीको लेकर राजाके पास आये। राजाने अपनी शंका गुरुजीके सामने रखी कि भागवत सुननेपर भी मेरा कल्याण क्यों नहीं हुआ? मनकी हलचल क्यों नहीं मिटी? गुरुजीने राजासे कहा कि थोड़ी देरके लिये मेरेको अपना अधिकार दे दो। राजाने उनकी बात स्वीकार कर ली। गुरुजीने आदेश दिया कि राजा और पण्डितजी—दोनोंको बाँध दो। राजपुरुषोंने दोनोंको बाँध दिया। अब गुरुजीने पण्डितजीसे कहा कि तुम राजाको खोल दो। पण्डितजी बोले कि मैं खुद बँधा हुआ हूँ, फिर राजाको कैसे खोल सकता हूँ! गुरुजीने राजासे कहा कि तुम पण्डितजीको खोल दो। राजाने भी यही उत्तर दिया कि मैं खुद बँधा हूँ, पण्डितजीको कैसे खोलूँ! गुरुजीने कहा कि महाराज! मैंने आपके प्रश्नका उत्तर दे दिया! राजाने कहा—मैं समझा नहीं! गुरुजी बोले—'जैसे खुद बँधा हुआ आदमी दूसरेको नहीं खोल सकता, ऐसे ही जो खुद बन्धनमें पड़ा है, वह दूसरेको बन्धन-मुक्त कैसे कर सकता है? दूसरेका कल्याण कैसे कर सकता है?' अनुभवी पुरुषसे जो लाभ होता है, वैसा लाभ दूसरे पुरुषसे नहीं होता। इसलिये अनुभवी पुरुषकी वाणीके अनुसार ही अपना जीवन बनाना चाहिये।

१५. निन्यानबेका चक्कर

एक सेठकी हवेली थी। बगलमें एक गरीबका छोटा-सा घर था। दोनों घरोंकी स्त्रियाँ जब आपसमें मिलती थीं, तब एक-दूसरेसे पूछती थीं कि आज तुमने क्या रसोई बनायी? सेठकी स्त्री कहती कि आज पापड़की सब्जी बनायी है अथवा दाल बनायी है। गरीब घरकी स्त्री कहती कि आज हमने हलवा-पूरी बनायी है अथवा खीर बनायी है! सेठकी स्त्रीने अपने पतिसे कहा कि हमलोग तो साधारण भोजन करते हैं, पर गरीब आदमी इतना माल खाते हैं! आखिर बात क्या है? सेठने कहा कि अभी वे निन्यानबेके चक्करमें नहीं पड़े हैं, इसीलिये माल खाते हैं। जब निन्यानबेका चक्कर लग जायगा, तब ऐसा माल नहीं खायेंगे। स्त्रीने पूछा कि यह निन्यानबेका चक्कर क्या होता है? सेठने कहा कि मैं बताऊँगा, देखती जाओ!

दूसरे दिन सेठने अपनी स्त्रीसे कहा कि तुम निन्यानबे रुपये लाओ। वह निन्यानबे रुपये लेकर आयी। सेठने उन रुपयोंको एक कपड़ेकी पोटलीमें बाँध दिया और अपनी स्त्रीसे कहा कि रातमें मौका देखकर यह पोटली उस गरीबके घर फेंक देना। रात होनेपर स्त्रीने वैसा ही कर दिया। सुबह होनेपर गरीब आदमीको आँगनमें एक पोटली पड़ी हुई दीखी। उसने भीतर ले जाकर पोटलीको खोला तो उसमें रुपये मिले। उसने बीस-बीस रुपये पाँच ज़गह रखे तो देखा कि पाँच बीसीमें एक रुपया कम है! पति-पत्नी दोनोंने विचार किया कि दो-तीन दिन घरका खर्चा कम करके एक रुपया बचा लें तो पाँच बीसी (सौ रुपये) पूरी हो जायगी। ऐसा विचार करके उन्होंने पैसे बचाने शुरू किये तो दो-तीन दिनमें एक रुपया बचा लिया। पाँच बीसी पूरी हो गयी! अब उन्होंने सोचा कि हमने दो-तीन दिनमें एक रुपया पैदा कर लिया, यदि

पहलेसे इस तरफ ध्यान देते तो आजतक कितने रुपये जमा हो जाते! इतने दिन व्यर्थ ही गँवाये! अब आगेसे ध्यान रखेंगे।

कुछ दिन बीतनेपर सेठने अपनी स्त्रीसे कहा कि आज तुम उस गरीबकी स्त्रीसे पूछना कि क्या बनाया है? जब गरीब घरकी स्त्री मिली तो सेठानीने पूछ लिया कि आज क्या बनाया है? उसने कहा—'चटनी पीस ली है, उसके साथ रोटी खा लेंगे।' सेठानीको निन्यानबेका चक्कर समझमें आ गया!

ग्यान बढ़ै गुनवान की संगति, ध्यान बढ़ै तपसी सँग कीन्हे।
मोह बढ़ै परिवार की संगति, लोभ बढ़ै धनमें चित दीन्हे॥
क्रोध बढ़ै नर मूढ़ की संगति, काम बढ़ै तिय को सँग कीन्हे।
बुद्धि बिबेक बिचार बढ़ै, 'कबि दीन' सुसज्जन संगति कीन्हे॥

१६. गधेसे मनुष्य बनाना

एक वैद्य था। वह अपने साथ एक आदमीको रखता था। एक दिन वे एक गाँवसे रवाना हुए तो किसी बातको लेकर वैद्यने उस आदमीकी ताड़ना की—'अरे, तू जानता नहीं, पहले तू कैसा था? तू तो गधा था। मैंने तेरेको गधेसे मनुष्य बनाया! मैंने तेरा इतना उपकार किया, फिर भी तू मेरी बात मानता नहीं!' पासमें ही एक गधेवाला जा रहा था। उसने वैद्यकी बात सुन ली कि यह गधेसे मनुष्य बनाता है। वह वैद्यके पास आया और बोला कि 'महाराज! यों तो मेरे पास कई गधे हैं, पर आपको दो गधे देता हूँ, मेहरबानी करके इनको आप मनुष्य बना दो।' वैद्य बोला—'हाँ, बना देंगे, पर इसका रुपया लगेगा भाई! एक गधेका सौ रुपया लगेगा।' गधेवालेने कहा—'ठीक है, मैं आपको अभी पूरा रुपया दे देता हूँ, आप इनको मनुष्य बना दो।' उसने वैद्यको दो सौ रुपये दे दिये

और अपने दो गधे देकर चला गया।

वैद्यने दोनों गधोंको बाजारमें जाकर बेच दिया। अब वह गधेवाला जब आकर पूछ तो वैद्य बोले कि 'अभी तुम्हारे गधे मनुष्य बन रहे हैं। उनपर मसाला चढ़ा दिया है।' ऐसा करते तीन–चार महीने बीत गये। अब वह गधेवाला आया तो वैद्य बोला कि 'अरे यार! तू आया नहीं! तेरे गधे तो कबसे मनुष्य बन गये और उनकी नौकरी भी लग गयी! जिस गधेके ज्यादा बाल थे, वह तो मौलवी बन गया और स्कूलमें बच्चोंको पढ़ाता है, और दूसरा गधा स्टेशन मास्टर बन गया। मैंने दोनोंको ठीक तरहसे मनुष्य बना दिया। परन्तु तू देरीसे आया, इसलिये मसाला ज्यादा चढ़ गया और वे नौकरीमें लग गये। अब तू जाने भाई!'

गधेवाला घास लेकर स्कूल गया। वैद्यने जिसका नाम बताया था, उस दाढ़ीवाले मौलवीके सामने जाकर वह खड़ा हो गया और घास दिखाते हुए कहने लगा—'आ जा, आ जा! घास ले ले, ले ले!' वह मौलवी चिल्लाया—'अरे! यह कौन है? क्या करता है? पागल हो गया है क्या?' गधेवाला बोला—'मैंने सौ रुपये खर्च करके तेरेको गधेसे मनुष्य बनाया है! मैं पागल कैसे हो गया?' मौलवीने उसको पागल कहते हुए बाहर निकाल दिया। अब वह स्टेशन मास्टरके पास पहुँचा और उसको भी घास दिखाकर कहने लगा—'आ जा, आ जा! ले ले, ले ले!' स्टेशन मास्टर बोला—'अरे, यह क्या करता है!' लोगोंने बताया कि यह पाठशालामें भी गया था और मौलवीको भी ऐसा ही कह रहा था! स्टेशन मास्टरने भी उसको पागल समझकर बाहर निकाल दिया।

अब गधेवाला वापिस वैद्यके पास आया और बोला कि वे दोनों तो मेरेको पागल कहते हैं! वैद्य बोला—'अरे भाई! मैंने पहले ही कहा था कि तू देरीसे आया, इसलिये उनपर ज्यादा मसाला चढ़ गया! अधिक मसाला चढ़नेसे अब वे कब्जेमें नहीं रहे! अब मैं क्या करूँ!'

इसी तरह मनुष्य अभिमान कर लेता है कि मैं बड़ा समझदार हूँ, बड़ा जानकार हूँ, तुम्हारेको वर्षोंतक पढ़ा सकता हूँ तो यह उसपर मसाला ज्यादा चढ़ गया! यह पता नहीं कि पहले जन्ममें क्या थे, पर अब मनुष्य बन गये तो मसाला अधिक चढ़ गया कि मैं ऐसा हूँ, तुम समझते नहीं! इस तरह जब मसाला अधिक चढ़ जाता है, तब अभिमान हो जाता है। फिर मनुष्य किसीकी बात नहीं मानता!

१७. रात कैसी बीती?

एक बाबाजी घूमते-फिरते एक शहरमें पहुँचे। रात हो गयी थी। सरदीके दिन थे। शहरका दरवाजा बन्द हो गया था। बाबाजीको ठण्ड लगी। गरम कपड़ा पासमें था नहीं। बाबाजीने सोनेके लिये जगह देखी। एक भड़भूँजेकी भट्ठी थी। बाबाजीने देखा कि यह जगह बढ़िया है। भट्ठीके भीतर थोड़ी-थोड़ी गरमाहट थी। बाबाजी उसके भीतर जाकर सो गये।

सुबह हुई। बाबाजीकी नींद खुली। बगलमें ही राजाका महल था। उधर राजाकी नींद खुली। राजाने अपने साथियोंसे पूछा—'कहो भाई! रात कैसी बीती?' इधर बाबाजी भट्ठीके भीतरसे बोले—'कुछ तुम्हारे-जैसी, कुछ तुम्हारेसे अच्छी!'

राजाको अनजानी आवाज सुनकर थोड़ा आश्चर्य हुआ। राजाने फिर पूछा—'रात कैसी बीती ?' बाबाजीने फिर कहा—'कुछ तुम्हारे-जैसी, कुछ तुम्हारेसे अच्छी!' राजाने अपने आदमियोंको भेजा कि जाकर देखो, 'यह कौन बोल रहा है ? उसको पकड़कर मेरे सामने लाओ।' राजपुरुषोंने बाहर जाकर चारों ओर देखा, पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया। जब पुनः बाबाजीने वही बात कही, तब राजपुरुषोंने देखा कि भट्ठीके भीतर एक बाबाजी बैठे हैं, वही बोल रहे हैं! उन्होंने बाबाजीसे कहा कि चलो, आपको राजाने बुलाया है। बाबाजीने कहा कि मैंने कौन-सा अपराध किया है, जिसके कारण राजाने मेरेको बुलाया है? राजपुरुषोंने कहा कि आपके किसी अपराधके कारण राजाने नहीं बुलाया है, वे तो आपसे मिलकर कुछ बात करना चाहते हैं। बाबाजी भट्ठीसे बाहर निकले। उनके मुखपर और शरीरपर जगह-जगह भट्ठीकी राख लगी हुई थी। कहीं-कहीं कालिख लगी हुई थी! वे उसी अवस्थामें राजपुरुषोंके साथ चल पड़े।

राजपुरुषोंने बाबाजीको राजाके सामने लाकर खड़ा कर दिया। राजाने बाबाजीको प्रणाम किया और पूछा कि मेरे प्रश्नका उत्तर आपने दिया था? बाबाजी बोले—'मैंने प्रश्न सुना तो उत्तर दे दिया, मेरेको पता नहीं कि प्रश्न आपने किया था!' राजाने कहा—'मैंने पूछा कि रात कैसी बीती तो आपने उत्तर दिया कि कुछ तुम्हारे-जैसी, कुछ तुम्हारेसे अच्छी। अब आप बतायें कि रात मेरे-जैसी कैसी बीती? मैं तो महलमें सोया था और आप भट्ठीमें, फिर मेरे-जैसी कैसे हुई?' बाबाजी बोले—'जब मैं और आप सो गये, तब न तो मेरेको भट्ठी याद रही और न आपको महल याद रहा, तो हम दोनों बराबर हो गये न?

आप नरम-नरम गद्दोंपर सोये, मैं नरम-नरम राखपर सोया!' राजा बोला—'और मेरेसे अच्छी कैसे हुई?' बाबाजी बोले—'नींद खुलते ही आपको अपनी और राज्यकी सैकड़ों चिन्ताएँ सताने लगीं, पर मेरेको कोई चिन्ता है ही नहीं! इसलिये मेरी रात आपसे भी अच्छी बीती!'

चाह गयी चिन्ता मिटी, मनुआँ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिये, सो साहनके साह॥

१८. ससुरालकी रीति

एक लड़की विवाह करके ससुरालमें आयी। घरमें एक तो उसका पति था, एक सास थी और एक दादी सास थी। वहाँ आकर उस लड़कीने देखा कि दादी सासका बड़ा अपमान, तिरस्कार हो रहा है! छोटी सास उसको ठोकर मार देती, गाली दे देती। यह देखकर उस लड़कीको बड़ा बुरा लगा और दया भी आयी! उसने विचार किया कि अगर मैं साससे कहूँ कि आप अपनी सासका तिरस्कार मत किया करो तो वह कहेगी कि कलकी छोकरी आकर मेरेको उपदेश देती है, गुरु बनती है! अतः उसने अपनी साससे कुछ नहीं कहा। उसने एक उपाय सोचा। वह रोज काम-धंधा करके दादी सासके पास जाकर बैठ जाती और उसके पैर दबाती। जब वह वहाँ ज्यादा बैठने लगी तो यह सासको सुहाया नहीं। एक दिन सासने उससे पूछा कि 'बहू! वहाँ क्यों जा बैठी?' लड़कीने कहा कि 'बोलो, काम बताओ!' सास बोली कि 'काम क्या बतायें, तू वहाँ क्यों जा बैठी?' लड़की बोली किं 'मेरे पिताजीने कहा था

कि जवान लड़कोंके साथ तो कभी बैठना ही नहीं, जवान लड़कियोंके साथ भी कभी मत बैठना; जो घरमें बड़े-बूढ़े हों, उनके पास बैठना, उनसे शिक्षा लेना। हमारे घरमें सबसे बूढ़ी ये ही हैं, और किसके पास बैठूँ? मेरे पिताजीने कहा था कि वहाँ हमारे घरकी रिवाज नहीं चलेगी, वहाँ तो तेरे ससुरालकी रिवाज चलेगी। मेरेको यहाँकी रिवाज सीखनी है, इसलिये मैं उनसे पूछती हूँ कि मेरी सास आपकी सेवा कैसे करती है?' सासने पूछा कि 'बुढ़ियाने क्या कहा?' वह बोली कि 'दादीजी कहती हैं कि यह मेरेको ठोकर नहीं मारे, गाली नहीं दे तो मैं सेवा ही मान लूँ!' सास बोली कि 'क्या तू भी ऐसा ही करेगी?' वह बोली कि 'मैं ऐसा नहीं कहती हूँ, मेरे पिताजीने कहा है कि बड़ोंसे ससुरालकी रीति सीखना!'

सास डरने लग गयी कि मैं अपनी सासके साथ जो बर्ताव करूँगी, वही बर्ताव मेरे साथ होने लग जायगा! एक जगह कोनेमें ठीकरी इकट्ठी पड़ी थीं। सासने पूछा—'बहू! ये ठीकरी क्यों इकट्ठी की हैं?'

लड़कीने कहा—'आप दादीजीको ठीकरीमें भोजन दिया करती हो, इसलिये मैंने पहले ही जमा कर ली।'

'तू मेरेको ठीकरीमें भोजन करायेगी क्या?'

'मेरे पिताजीने कहा है कि तेरे वहाँकी रीति चलेगी।'

'यह रीति थोड़े ही है!'

'तो फिर आप ठीकरीमें क्यों देती हो?'

'थाली कौन माँजे?'

'थाली तो मैं माँज दूँगी।'

'तो तू थालीमें दिया कर, ठीकरी उठाकर बाहर फेंक।'

अब बूढ़ी माँजीको थालीमें भोजन मिलने लगा। सबको भोजन देनेके बाद जो बाकी बचे, वह खिचड़ीकी खुरचन, कंकड़वाली दाल माँजीको दी जाती थी। लड़की उसको हाथमें लेकर देखने लगी। सासने पूछा—'बहू! क्या देखती हो?'

'मैं देखती हूँ कि बड़ोंको भोजन कैसा दिया जाय।'

'ऐसा भोजन देनेकी कोई रीति थोड़े ही है!'

'तो फिर आप ऐसा भोजन क्यों देती हो?'

'पहले भोजन कौन दे?'

'आप आज्ञा दो तो मैं दे दूँगी।'

'तो तू पहले भोजन दे दिया कर।'

'अच्छी बात है!'

अब बूढ़ी माँजीको बढ़िया भोजन मिलने लगा। रसोई बनते ही वह लड़की ताजी खिचड़ी, ताजा फुलका, दाल-साग ले जाकर माँजीको दे देती। माँजी तो मन-ही-मन आशीर्वाद देने लगी। माँजी दिनभर एक खटियामें पड़ी रहती। खटिया टूटी हुई थी। उसमेंसे बन्दनवारकी तरह मूँज नीचे लटकती थी। लड़की उस खटियाको देख रही थी। सास बोली कि 'क्या देखती हो?'

'देखती हूँ कि बड़ोंको खाट कैसी दी जाय।'

'ऐसी खाट थोड़े ही दी जाती है! यह तो टूट जानेसे ऐसी हो गयी।'

'तो दूसरी क्यों नहीं बिछातीं?'

'तू बिछा दे दूसरी।'

'आप आज्ञा दो तो दूसरी खाट बिछा दूँ!'

अब माँजीके लिये निवारकी खाट लाकर बिछा दी गयी।

एक दिन कपड़े धोते समय वह लड़की माँजीके कपड़े देखने लगी। कपड़े छलनी हो रखे थे। सासने पूछा कि 'क्या देखती हो?'

'देखती हूँ कि बूढ़ोंको कपड़ा कैसा दिया जाय।'

'फिर वही बात, कपड़ा ऐसा थोड़े ही दिया जाता है? यह तो पुराना होनेपर ऐसा हो जाता है।'

'फिर वही कपड़ा रहने दें क्या?'

'तू बदल दे।'

अब लड़कीने माँजीका कपड़ा, चादर, बिछौना आदि सब बदल दिया। उसकी चतुराईसे बूढ़ी माँजीका जीवन सुधर गया! अगर वह लड़की सासको कोरा उपदेश देती तो क्या वह उसकी बात मान लेती? बातोंका असर नहीं पड़ता, आचरणका असर पड़ता है। इसलिये लड़कियोंको चाहिये कि ऐसी बुद्धिमानीसे सेवा करें और सबको राजी रखें।

१९. अब छाछको सोच कहा कर है!

एक राजकुमार था। उसके साथ पाँच-सात मित्र घोड़ोंपर घूम रहे थे। वहाँ बहुत-सी गूजर-स्त्रियाँ दूध, छाछ, दही आदिकी बिक्री करनेको जा रही थीं। राजकुमारको भगवान् श्रीकृष्णकी याद आ गयी कि वे भी दूध-दही लूटा करते थे तो हम भी आज वैसा ही करें। एक तमाशा कर लें, फिर उनको दाम दे देंगे। राजकुमार और उसके साथियोंने उनके मटके फोड़ दिये। गूजरियाँ बेचारी रोने लगीं। उनमेंसे एक गूजरी ऐसी थी, जिसका मटका फूट गया, छाछ बिखर गयी, फिर

भी वह हँस रही थी! राजकुमारने उससे पूछा कि तू रोयी नहीं, क्या बात है? उसने कहा कि महाराज! मेरी बात बहुत लम्बी है! मैं छाछ गिरनेका क्या शोक करूँ? राजकुमारने उससे कहा कि अपनी बात सुनाओ। वह कहने लगी—

मैं अमुक शहरके एक सेठकी पत्नी थी और मेरी गोदमें एक बालक था। वे सेठ कमानेके लिये दूसरे देशमें चले गये। वहाँके राजाकी नीयत खराब थी। मेरी छोटी अवस्था थी और सुन्दर रूप था। राजाने मेरेपर खराब दृष्टि कर ली और कहा कि अमुक दिन तेरेको आकर मिलना ही पड़ेगा, तुम कब आओगी, जवाब दो। मैंने कहा कि अभी ठहरो। मैंने अपने पतिको पत्र भेजा कि जल्दी आओ, मेरेपर ऐसी आफत आयी है। पति आ गया। उससे सारी बात कही और आपसमें सलाह की कि क्या किया जाय? सेठने कहा कि तुम राजाको समय दे दो। मैंने राजाके पास समाचार भेज दिया कि आप शहरके बाहर अमुक जगह रातमें आ जाओ, पर शर्त यह है कि उस स्थानके मीलभर नजदीकमें कोई अन्य व्यक्ति न रहे। राजाने स्वीकार कर लिया। हम दोनों पति-पत्नी घरसे निकल गये, कारण कि यहाँ टिक नहीं सकेंगे। मैं रात्रिमें वहाँ तलवार लेकर गयी। पतिको एक टूटे-फूटे मकान (खँडहर)-में छिपनेके लिये कह दिया। जब राजा आया तो मैंने तलवारसे उसको मार दिया और भागकर पतिके पास गयी। वहाँ जानेपर मैंने पतिको मरा हुआ पाया! उसको जहरीले साँपने काट लिया था। फिर तो मैं अकेली वहाँसे भागी कि अगर पकड़ी गयी तो लोग मेरेको मार देंगे। लड़का पीछे छूट गया।

आगे भागते हुए जंगल आ गया तो वहाँ डाकू मिल

गये। उन लोगोंने मेरेको पकड़ लिया, मेरे सब गहने छीन लिये और वेश्याके घर ले जाकर बिक्री कर दिया। अब मैं वहाँ रहने लगी। उधर दूसरा राजा बैठा तो उसने मेरे लड़केको पालकर बड़ा किया। मेरा लड़का वहीं राज्यमें नौकरी करने लगा। इधर वेश्याओंके संगके प्रभावसे मैं भी वेश्या हो गयी। एक बार वह लड़का मेरे यहाँ आया और रातभर रहा। मेरेको वहम हो गया कि यह कौन है? सुबह होते ही पूछा तो उसने अपना नाम-पता बताया, तब पता लगा कि अरे! यह तो मेरा ही बेटा है! मेरेको बड़ी ग्लानि, बड़ा भारी दुःख हुआ कि मैं क्या थी और कुसंगके प्रभावसे क्या हो गयी! पण्डितोंसे पूछा कि ऐसा पाप किसीसे हो जाय तो क्या करे? उन्होंने बताया कि चिता जलाकर आगमें बैठ जाय। विचार आया कि चितामें बैठ जाऊँगी तो पीछे गङ्गाजीमें फूल कौन डालेगा? इसलिये गङ्गाके किनारे लकड़ियाँ इकट्ठी करके बैठ गयी और आग लगा दी। लकड़ियाँ जलने लगीं। इतनेमें पीछेसे बाढ़ आ गयी। मैं लकड़ियोंके साथ उसमें बह गयी। आग बुझ गयी और एक लकड़ीपर बैठे-बैठे एक गाँव-के किनारे पहुँच गयी। उस गाँवमें गूजर बसते थे। अब वहाँ उनकी चीज बिक्री करके काम चलाती हूँ। आज छाछ लेकर आयी थी। छाछ गिर गयी तो अब इसकी चिन्ता क्या करूँ?

हत्वा नृपं पतिमवेक्ष्य भुजङ्गदष्टं-
देशान्तरे विधिवशाद् गणिकां च याता।
पुत्रं प्रति समधिगम्य चितां प्रविष्टा
शोचामि गोपगृहिणी कथमद्य तक्रम्॥

नृप मार चली अपने पिव पै, पिव भुजंग डस्यो जो गयो मर है।
मग चोर मिले उन लूट लई, पुनि बेच दई गनिका घर है।
सुत सेज रमी, चिता पै चढ़ी, जल खूब बह्यो सरिता तर है।
महाराज कुमार भई गुजरी, अब छाछ को सोच कहा कर है॥

जीवनमें ऐसी कितनी घटनाएँ घटी हैं, क्या-क्या दशा हुई है, अब थोड़े-से नुकसानमें क्या चिन्ता करूँ? ऐसी बातें तो होती रहती हैं और बीतती रहती हैं। अब छाछ गिर गयी तो क्या हो गया! हमारे न जाने कितने जन्म हुए हैं और उनमें क्या-क्या दशा हुई है! उनमें कभी बेटा मर गया, कभी पति मर गया, कभी पत्नी मर गयी। कभी धन आया, कभी धन चला गया। ये सब कई बार मिले और कई बार बिछुड़े। हवा चलती है तो कहाँ-कहाँका फूस आकर इकट्ठा हो जाता है और दूसरे झोंकेमें अलग हो जाता है। इसमें नयी बात क्या हो गयी! संसारमें सब आने-जानेवाले हैं। इनके लिये क्या चिन्ता करें?

२०. वहम मिट गया

मुकुन्ददास नामक एक व्यक्ति किसी अच्छे सन्तका शिष्य था। वे सन्त जब भी उसको अपने पास आनेके लिये कहते, वह यही कहता कि मेरे बिना मेरे स्त्री-पुत्र रह नहीं सकेंगे। वे सब मेरे ही सहारे बैठे हुए हैं। मेरे बिना उनका निर्वाह कैसे होगा? सन्त कहते कि भाई! यह तुम्हारा वहम है, ऐसी बात है नहीं। एक दिन सन्तने मुकुन्ददाससे कहा कि तुम परीक्षा करके देख लो। वह परीक्षाके लिये मान गया। सन्तने उसको प्राणायामके द्वारा श्वास रोकना सिखा दिया।

एक दिन मुकुन्ददास अपने परिवारके साथ नदीमें नहानेके लिये गया। नहाते समय उसने डुबकी लगाकर अपना श्वास रोक लिया और नदीके भीतर-ही-भीतर दूर जंगलमें चला गया और बाहर निकलकर सन्तके पास पहुँच गया। इधर परिवारवालोंने नदीके भीतर उसकी बड़ी खोज की। वह नहीं मिला तो उनको विश्वास हो गया कि वह तो नदीमें बह गया। सब जगह बड़ा हल्ला हुआ कि अमुक व्यक्ति डूबकर मर गया! उस सन्तके सत्संगियोंने आपसमें विचार किया कि मुकुन्ददास तो बेचारा मर गया, अब हमलोगोंको उसके स्त्री-बच्चोंके निर्वाहका प्रबन्ध करना चाहिये। सबने अपनी-अपनी तरफसे सहायता देनेकी बात कही। किसीने आटेका प्रबन्ध अपने जिम्मे लिया, किसीने दालका प्रबन्ध अपने जिम्मे लिया, किसीने चावलका प्रबन्ध करनेकी बात कही, आदि-आदि। धर्मशालामें एक कमरा लेकर उसमें आटा, दाल, घी आदि सब वस्तुएँ इकट्ठी कर दीं। दूध आदिके लिये स्त्रीको पैसे दे दिये। महीनेका खर्चा बाँध दिया। एक व्यक्तिने कहा कि मैं कुछ दे तो नहीं सकता, पर वस्तुओंको घर पहुँचानेकी व्यवस्था मैं कर दूँगा। इस प्रकार सन्तसे पूछे बिना उनके सत्संगियोंने सब प्रबन्ध कर दिया।

थोड़े दिनोंके बाद मुकुन्ददासकी स्त्री सन्तके पास गयी। सन्तने घरका समाचार पूछा कि कोई तकलीफ तो नहीं है? वह बोली कि जो व्यक्ति चला गया, उसकी पूर्ति तो हो नहीं सकती, पर हमारा जीवन-निर्वाह पहलेसे भी अच्छा हो रहा है! सन्तने पूछा—'पहलेसे भी अच्छा कैसे?' स्त्रीने कहा—'आपकी कृपासे सत्संगियोंने सब आवश्यक सामान रखवा दिया

है। जब जिस वस्तुकी जरूरत पड़ती है, मिल जाती है।' मुकुन्ददास छिपकर उनकी बातें सुन रहा था।

कुछ समय बीत गया तो सन्तने मुकुन्ददाससे कहा कि तू अब घर जाकर देख। वह रातके समय अपने घर गया और बाहरसे किवाड़ खटखटाया। स्त्रीने पूछा—'कौन है?' मुकुन्ददास बोला—'मैं हूँ, किवाड़ खोल।' आवाज सुनकर स्त्री डर गयी कि वे तो मर गये, उनका भूत आ गया! स्त्री बोली—'मैं किवाड़ नहीं खोलती।' मुकुन्ददास बोला—'अरे, मैं मरा नहीं हूँ; किवाड़ खोल।' स्त्री बोली—'बच्चे देखेंगे तो डरके मारे उनके प्राण निकल जायँगे, आप चले जाओ।' मुकुन्ददास बोला—'अरे, मेरे बिना तुम्हारा काम कैसे चलेगा?' स्त्री बोली—'सन्तोंकी कृपासे पहलेसे भी बढ़िया काम चलता है, आप चिन्ता मत करो। आप कृपा करके यहाँसे चले जाओ।' मुकुन्ददास बोला—'तुम्हारेको कोई दुःख तो नहीं है?' स्त्री बोली—'दुःख यही है कि आप आ गये! आप न आयें तो कोई दुःख नहीं! आप आओ मत—यही कृपा करो!'

२१. विलक्षण अतिथि-सत्कार

विष्णुकाञ्चीमें दामोदर नामक एक गरीब ब्राह्मण रहते थे। जब उनका विवाह हुआ, तब उन्होंने अपनी स्त्रीसे कह दिया कि देखो, अब मैं गृहस्थ बन गया हूँ। गृहस्थका खास काम है—अतिथि-सत्कार करना। मैं घरमें होऊँ या न होऊँ, कोई अतिथि आये तो भूखा मत जाने देना। ब्रह्मचारीका गुरु-आज्ञाका पालन करना, गृहस्थका अतिथि-सत्कार करना, वानप्रस्थका तप

करना और संन्यासीका भगवच्चिन्तन-भजन करना खास धर्म है। उनकी स्त्रीने कहा कि अच्छी बात है। वे ब्राह्मण काञ्ची नगरीमें फिरते और भिक्षामें जो कुछ मिल जाता, लाकर स्त्रीको दे देते। घरकी स्थिति बहुत साधारण थी। खानेके लिये अन्न भी नहीं था।

भगवान् बड़े लीला पुरुषोत्तम हैं। उनकी लीला बड़ी विचित्र है। एक दिन भगवान् बूढ़े संन्यासी बनकर आये और बाहर चबूतरेपर बैठकर बोले कि घरमें कोई दामोदर है? ब्राह्मणने सुना तो बाहर आकर प्रणाम किया। संन्यासी बोले कि आज मनमें आ गयी कि तुम्हारे यहाँ भोजन करूँ। ब्राह्मण बोला कि बड़ी अच्छी बात है, आनन्दकी बात है! वह बूढ़े संन्यासीको भीतर ले गया और उनको बैठाया। दैवयोगसे उस दिन ब्राह्मणको गाँवसे भिक्षा मिली ही नहीं थी! उसने सोचा कि अब क्या करें? खुद तो भूखे भी रह जायँ, पर महाराजको भूखा कैसे रखें? घरमें कोई सम्पत्ति थी नहीं। केवल फटे-पुराने कपड़े और बर्तन, गोपीचन्दन, टूटी हुई चटाई—यह घरकी सामग्री थी! ब्राह्मणने अपनी स्त्रीसे कहा कि आज तो बड़ा गजब हो जायगा, अतिथि भूखा रह जायगा! स्त्री बोली कि आप घबराते क्यों हो, मैं बैठी हूँ न! ब्राह्मण बोला कि क्या तेरे पास कोई गहना है? वह बोली—'गहना कहाँ है? कपड़े भी फटे-पुराने हैं!' ब्राह्मण बोला—'तो फिर अतिथि-सत्कार कैसे करेंगे?' स्त्री बोली—'आप नाईके घरसे कतरनी (कैंची) ले आओ।' ब्राह्मण कतरनी ले आया। स्त्रीने अपने सिरके केश भीतर-भीतरसे कतर लिये और बाहरके केश बाँध लिये। कटे हुए केशोंकी रस्सी बनायी और ब्राह्मणको देकर बोली कि

इसको बेच आओ। ब्राह्मण उसको लेकर बाजार गया और बेचनेपर जो थोड़े-से पैसे मिले, उनसे थोड़े चावल और दाल ले आया। स्त्रीने दाल-चावल बना दिये। संन्यासीको कहा कि महाराज! रसोई तैयार है, भोजन करो। महाराज बैठ गये। ब्राह्मण केलेका पत्ता ले आया और उसपर भोजन परोस दिया। महाराज पाने लग गये। उन्होंने पत्तलमें एक दाना भी नहीं छोड़ा। ब्राह्मणने कहा—महाराज, और लो। वे बोले—'हाँ, और ले आ।' ब्राह्मणने बचा हुआ सारा भोजन परोस दिया। महाराजने सब पा लिया और बोले कि बस, अब तृप्ति हो गयी। फिर बोले कि भाई, बूढ़ा शरीर है, कहाँ जायँगे? अभी तो हम यहाँ ही रहेंगे। ब्राह्मणने कहा कि हाँ महाराज, आप यहीं विराजें। महाराज दिनभर वहीं रहे। सायं हुई तो बोले कि बस, दाल-चावल बना लेना, ज्यादा वस्तुकी जरूरत नहीं। ब्राह्मण बोला कि ठीक है महाराज! ब्राह्मणकी स्त्रीने सिरके बाकी केश भी काट दिये और उनको बेचकर महाराजके लिये दाल-चावल बना दिये। महाराजने पूरे दाल-चावल खा लिये, उसमेंसे कुछ भी नहीं छोड़ा। फिर महाराज बोले कि रातको हम कहाँ जायँगे? हमारा कोई मकान तो है नहीं। बूढ़ा शरीर है। आज हम यहाँ ही रहेंगे। ब्राह्मण बोला कि हाँ महाराज! आप यहीं विराजें।

चटाईका एक टुकड़ा था, उसको ब्राह्मणने नीचे बिछा दिया। महाराज उसपर लेट गये। ब्राह्मण उनके चरण दबाने लगा। थोड़ी देरमें महाराजको नींद आ गयी। उनके चरणोंके एक तरफ ब्राह्मण सो गया और एक तरफ उसकी स्त्री सो गयी। जब वे दोनों सो गये, तब बाबाजी जाग बैठे! उन्होंने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे केश ठीक हो जायँ, बढ़िया कपड़े हो जायँ,

गहने हो जायँ, धन-धान्यसे भण्डार भर जाय, आदि-आदि। फिर वे अन्तर्धान हो गये। स्त्रीकी नींद खुली तो देखा कि हाथोंमें गहने हैं, सुन्दर वस्त्र हैं और सिरपर केश भी हैं! उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या कौतुक है! उसने पतिको जगाया। ब्राह्मणने उठकर देखा कि बाबाजी नहीं हैं तो बाहर भागा कि बाबाजी कहाँ गये? बूढ़ा शरीर है, कैसे गये होंगे! स्त्रीने कहा कि आप देखो तो सही! अपनी तरफ देखो, घरकी तरफ देखो! ब्राह्मणने देखा तो अब वे लगे रोने कि महाराज! हमने आपको पहचाना नहीं! हमारेसे आपकी सेवामें कितनी त्रुटि हो गयी! हम अनजान थे महाराज! हमें क्षमा करो! भगवान् प्रकट हो गये और दोनोंसे बोले कि तुम्हारे भोजनसे मैं बहुत तृप्त हुआ! अब तुम खूब अतिथि-सत्कार करो, फिर अन्तमें तुम दोनों मेरे धाममें आ जाओगे।

२२. एक शहरमें चार साधु

एक शहरमें चार साधु आये। एक साधु शहरके चौराहेमें जाकर बैठ गया, एक घण्टाघरमें जाकर बैठ गया, एक कचहरीमें जाकर बैठ गया और एक श्मशानमें जाकर बैठ गया।

चौराहेमें बैठे साधुसे लोगोंने पूछा कि बाबाजी! आप यहाँ आकर क्यों बैठे हो? क्या और कोई बढ़िया जगह नहीं मिली? साधुने कहा—'यहाँ चारों दिशाओंसे लोग आते हैं और चारों दिशाओंमें जाते हैं। किसी आदमीको रोको तो वह कहता है कि रुकनेका समय नहीं है, जरूरी कामपर जाना है। अब यह पता नहीं लगता कि जरूरी काम किस दिशामें है? सांसारिक

कामोंमें भागते-भागते जीवन बीत जाता है, हाथ कुछ लगता नहीं! न तो सांसारिक काम पूरे होते हैं और न भगवान्‌का भजन ही होता है! इसलिये हमें यह जगह बैठनेके लिये बढ़िया दीखती है, जिससे सावधानी बनी रहे।'

घण्टाघरमें बैठे साधुसे लोगोंने पूछा कि बाबाजी! यहाँ क्यों बैठे हो? साधुने कहा—'घड़ीकी सुईयाँ दिनभर घूमती हैं, पर बारह बजते ही हाथ जोड़ देती हैं कि बस, हमारे पास इतना ही समय है, अधिक कहाँसे लायें? घण्टा बजता है तो वह बताता है कि तुम्हारी उम्रमेंसे एक घण्टा कम हो गया! जीवनका समय सीमित है। प्रतिक्षण आयु नष्ट हो रही है और मौत नजदीक आ रही है। अतः सावधान होकर अपना समय भगवान्‌के भजनमें और दूसरोंकी सेवामें लगाना चाहिये। इसलिये साधुके बैठनेकी यह जगह हमें बढ़िया दीखती है, जिससे सावधानी बनी रहे।'

कचहरीमें बैठे साधुसे लोगोंने पूछा कि बाबाजी! आप यहाँ क्यों बैठे हो? साधुने कहा—'यहाँ दिनभर अपराधी आते हैं और पुलिस उनको डण्डे मारती है। मनुष्य पाप तो अपनी मरजीसे करता है, पर दण्ड दूसरेकी मरजीसे भोगना पड़ता है। अगर वह पाप करे ही नहीं तो फिर दण्ड क्यों भोगना पड़े? इसलिये साधुके बैठनेकी यह जगह बढ़िया दीखती है, जिससे सावधानी बनी रहे।'

श्मशानमें बैठे साधुसे लोगोंने पूछा कि बाबाजी! आप यहाँ क्यों बैठे हो? साधुने कहा—'शहरमें कोई भी आदमी सदा नहीं रहता। सबको एक दिन यहाँ आना ही पड़ता है। यहाँ आनेके बाद फिर आदमी कहीं नहीं जाता। यहाँ आकर उसकी

यात्रा समाप्त हो जाती है। कोई भी आदमी यहाँ आनेसे बच नहीं सकता। अतः जीवन रहते-रहते परम लाभकी प्राप्ति कर लेनी चाहिये, जिससे फिर संसारमें आकर दुःख न पाना पड़े। इसलिये मेरेको यह जगह बैठनेके लिये बढ़िया दीखती है, जिससे सावधानी बनी रहे।'

२३. चार आशीर्वाद

किसी जंगलमें एक शिकारी जा रहा था। रास्तेमें घोड़ेपर सवार एक राजकुमार उसको मिला। वह भी उसके साथ चल पड़ा। आगे उनको एक तपस्वी और एक साधु मिले। वे दोनों भी उनके साथ चल दिये। चारों आदमी जंगलमें जा रहे थे। आगे उनको एक कुटिया दिखायी दी। उसमें एक बूढ़े बाबाजी बैठे थे। चारों आदमी कुटियाके भीतर गये और बाबाजीको प्रणाम किया। बाबाजीने उन चारोंको चार आशीर्वाद दिये।

बाबाजीने राजकुमारसे कहा—'राजपुत्र! तुम चिरंजीव रहो।' तपस्वीसे कहा—'ऋषिपुत्र! तुम मत जीओ।' साधुसे कहा—'तुम चाहे जीओ, चाहे मरो, जैसी तुम्हारी मरजी!' शिकारीसे कहा—'तुम न जीओ, न मरो।' बाबाजी चारोंको आशीर्वाद देकर चुप हो गये। चारों आदमियोंको बाबाजीका आशीर्वाद समझमें नहीं आया। उन्होंने प्रार्थना की कि कृपा करके अपने आशीर्वादका तात्पर्य समझायें।

बाबाजी बोले—'राजाको नरकोंमें जाना पड़ता है। मनुष्य पहले तप करता है, तपके प्रभावसे राजा बनता है और फिर मरकर नरकोंमें जाता है—'तपेश्वरी राजेश्वरी, राजेश्वरी नरकेश्वरी'!

इसलिये मैंने राजकुमारको सदा जीते रहनेका आशीर्वाद दिया। जीता रहेगा तो सुख पायेगा। तपस्या करनेवाला जीता रहेगा तो तप करके शरीरको कष्ट देता रहेगा। वह मर जायगा तो तपस्याके प्रभावसे स्वर्गमें जायगा अथवा राजा बनेगा। इसलिये उसको मर जानेका आशीर्वाद दिया, जिससे वह सुख पाये। साधु जीता रहेगा तो भजन-स्मरण करेगा, दूसरोंका उपकार करेगा और मर जायगा तो भगवान्के धाममें जायगा। वह जीता रहे तो भी आनन्द है, मर जाय तो भी आनन्द है। इसलिये मैंने उसको आशीर्वाद दिया कि तुम जीओ, चाहे मरो, तुम्हारी मरजी। शिकारी दिनभर जीवोंको मारता है। वह जीयेगा तो जीवोंको मारेगा और मरेगा तो नरकोंमें जायगा। इसलिये मैंने कहा कि तुम न जीओ, न मरो।

राजपुत्र चिरंजीव मा जीव ऋषिपुत्रकः।
जीव वा मर वा साधु व्याध मा जीव मा मरः॥

मनुष्यको अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिये कि जीते भी मौज रहे और मरनेपर भी मौज रहे! साधु बनना है, पर साधुका वेश धारण करनेकी जरूरत नहीं। गृहस्थमें रहते हुए भी मनुष्य साधु बन सकता है। भगवान्का भजन-स्मरण करे और दूसरोंकी सेवा करे तो यहाँ भी आनन्द है और वहाँ भी आनन्द है। दोनों हाथोंमें लड्डू हैं! कबीरजीने कहा है—

सब जग डरपे मरण से, मेरे मरण आनन्द।
कब मरिये कब भेटिये, पूरण परमानन्द॥

२४. आज्ञापालनकी महिमा

भगवान् श्रीकृष्णने सांदीपनि ऋषिसे विद्याध्ययन किया था। सांदीपनि उनके विद्यागुरु थे। वे सांदीपनि ऋषि जब बाल्यावस्थामें अपने गुरुके पास पढ़ते थे, तब उन्होंने गुरुकी बहुत सेवा की थी। सभी विद्यार्थियोंमें सांदीपनिकी गुरुभक्ति विशेष थी। एक बार गुरुके मनमें सांदीपनिकी परीक्षा लेनेकी आयी। एक दिन विद्यार्थी बाहर गये हुए थे। गुरुका एक बालक था, जो वहाँ खेल रहा था। जब गुरुने विद्यार्थियोंको आते हुए देखा, तब उन्होंने अपने बालककी ओर संकेत करते हुए सांदीपनिसे कहा कि इसको कुएँमें डाल दे। सांदीपनिने बालकको उठाकर कुएँमें डाल दिया! विद्यार्थियोंने देखा तो वे दौड़ते हुए आये कि अरे! इसने गुरुजीके बालकको कुएँमें डाल दिया। कुएँका जल नजदीक ही था। विद्यार्थी उसमें कूदे और बालकको उठाकर ले आये। अब विद्यार्थी सांदीपनिको मारने लगे। सांदीपनिने उनकी मार सह ली, पर यह नहीं बोले कि गुरुजीने कहा था। गुरुजीने विद्यार्थियोंको रोका कि इसको मारो मत, तुम्हारा गुरुभाई है।

एक दिनकी बात है, विद्यार्थी कहींसे आ रहे थे। उनको आते देखकर गुरुजीने सांदीपनिसे कहा कि इस छप्परको आग लगा दे। सांदीपनिने चट आग लगा दी! विद्यार्थियोंने दौड़कर आग बुझायी और सांदीपनिको मारने लगे कि गुरुजीके घरको जलाता है! सांदीपनि कुछ बोले नहीं, चुपचाप मार सहते रहे। गुरुजीने विद्यार्थियोंको रोका।

सांदीपनि बहुत विशेष बुद्धिमान् भी नहीं थे और जड़ बुद्धि भी नहीं थे, मध्यम बुद्धिके थे। परन्तु उनमें यह विशेषता थी कि गुरुजी

जो आज्ञा देते थे, वे चट वह काम कर देते थे। श्रेष्ठ पुरुषोंकी सबसे बड़ी सेवा है—उनकी आज्ञाका पालन करना—*'अग्या सम न सुसाहिब सेवा'* (मानस, अयोध्या० ३०१। २)। आज्ञाका पालन करनेसे उनकी शक्ति हमारेमें आ जाती है। परन्तु वह शक्ति तब आती है, जब उनकी आज्ञाके अनुसार तत्काल काम कर दे। आज्ञा-पालनमें जितनी देर करेंगे, उतनी ही शक्ति कम होती जायगी। इसलिये सांदीपनि अपने गुरुकी आज्ञा (वचन)-को नीचे नहीं गिरने देते थे अर्थात् उसपर विचार किये बिना तत्काल वह काम कर देते थे—**'आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया'** (रघु० १४। ४६)।

जब विद्याध्ययन समाप्त हुआ, तब विद्यार्थी अपने-अपने घर चले गये। उनमेंसे कई अच्छे पण्डित बन गये। सांदीपनि भी चले गये। पीछे एक दिन गुरु महाराज बहुत बीमार पड़ गये। उनकी बीमारीका समाचार सुनकर शिष्यलोग उनके दर्शनके लिये आये। गुरुजीके शरीर छोड़नेका समय आया तो उन्होंने अपने शिष्योंको वस्तुएँ दीं। उन्होंने किसीको पञ्चपात्र दे दिया, किसीको आचमनी दे दी, किसीको पवित्री दे दी, किसीको आसन दे दिया, किसीको माला दे दी, किसीको गोमुखी दे दी, आदि-आदि। शिष्योंने उन वस्तुओंको बड़े आदरसे लिया कि गुरु महाराजकी प्रसादी है! जब सांदीपनि गुरुके सामने आये तो गुरुजी चुप हो गये, फिर बोले कि बेटा! तेरेको क्या दूँ? तेरेको देनेयोग्य कोई वस्तु मेरे पास नहीं है! तेरी जो गुरुभक्ति है, उसके समान मेरे पास कुछ नहीं है! परन्तु मैं तेरेको आशीर्वाद देता हूँ कि त्रिलोकीनाथ भगवान् तेरे शिष्य बनेंगे! बादमें इन्हीं सांदीपनिके पास आकर भगवान् श्रीकृष्ण इनके शिष्य बने!

२५. विलक्षण साधना

शबरी भगवान्‌की परम भक्ता थी। पहले वह 'शबर' जातिकी एक भोली-भाली लड़की थी। शबर-जातिके लोग कुरूप होते थे। परन्तु शबरी इतनी कुरूप थी कि शबर-जातिके लोग भी उसको स्वीकार नहीं करते थे! माँ-बापको बड़ी चिन्ता होने लगी कि लड़कीका विवाह कहाँ करें! ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आखिर उनको शबर-जातिका एक लड़का मिल गया। माँ-बापने रातमें शबरीका विवाह करके उसको रातमें ही विदा कर दिया। लड़केको कह दिया कि भैया, तुम रात-रातमें ही अपनी स्त्रीको ले जाओ। लड़का उसको लेकर रवाना हो गया। आगे-आगे लड़का चल रहा था, पीछे-पीछे शबरी चल रही थी। चलते-चलते वे दण्डकवनमें आ पहुँचे। वहाँ सूर्योदय हो गया। लड़केके मनमें आया कि देखूँ तो सही, मेरी स्त्री कैसी है! उसने पीछे मुड़कर शबरीको देखा तो उसकी कुरूपता देखकर वह डरके मारे वहाँसे भाग गया कि यह तो कोई डाकण है, मेरेको खा जायगी! अब शबरी बेचारी दण्डकवनमें अकेली रह गयी। वह पीहरसे तो आ गयी और ससुरालका पता नहीं। अब वह कहाँ जाय!

दण्डकवनमें रहनेवाले ऋषि शबरीको अछूत मानकर उसका तिरस्कार करने लगे। वहाँ 'मतंग' नामके एक वृद्ध ऋषि रहते थे, उन्होंने शबरीको देखा तो उसपर दया आ गयी। उन्होंने कृपा करके उसको अपने आश्रममें शरण दे दी। दूसरे ऋषियोंने इसका बड़ा विरोध किया कि आपने अछूत जातिकी स्त्रीको अपने पास रख लिया! परन्तु मतंग ऋषिने उनकी बात मानी

नहीं। उन्होंने बड़े स्नेहपूर्वक शबरीसे कहा कि बेटा! तुम डरो मत, घबराओ मत, मेरे पास रह जाओ। जैसे कोई माँ-बापके पास रहे, ऐसे शबरी खुशीसे वहाँ रहने लग गयी।

शबरीको सेवा करनेमें बड़ा आनन्द आता था। सब ऋषि-मुनि शबरीका तिरस्कार किया करते थे, इसलिये वह छिपकर, डरते-डरते उनकी सेवा किया करती थी। रातमें जब सब सो जाते, तब जिस रास्तेसे ऋषिलोग स्नानके लिये पम्पा सरोवर जाते थे, वह रास्ता बुहारकर साफ कर देती। जहाँ कंकड़ होते, वहाँ बालू बिछा देती। ऋषियोंके लिये ईंधन लाकर रख देती। अगर कोई देख लेता तो वहाँसे भाग जाती। वह डरती थी कि अगर मेरी छाया ऋषियोंपर पड़ जायगी तो वे अशुद्ध हो जायँगे। इस प्रकार ऋषि-मुनियोंकी सेवामें उसका समय बीतता गया। आखिर एक दिन वह समय आ पहुँचा, जो सबके लिये अनिवार्य है! मतंग ऋषिका शरीर छूटनेका समय आ गया। जैसे माँ-बापके मरते समय बालक रोता है, ऐसे शबरी भी रोने लग गयी! रोनेके सिवाय वह और करे क्या! हाथकी बात थी नहीं! मतंग ऋषिने कहा कि बेटा! तुम चिन्ता मत करो। एक दिन तेरे पास भगवान् राम आयेंगे! मतंग ऋषि शरीर छोड़कर चले गये।

अब शबरी भगवान् रामके आनेकी प्रतीक्षा करने लगी। प्रतीक्षा बहुत ऊँची साधना है। इसमें भगवान्का विशेष चिन्तन होता है। भगवान्का भजन-ध्यान करते हैं तो वह इतना सजीव साधन नहीं होता, निर्जीव-सा होता है। परन्तु प्रतीक्षामें सजीव साधना होती है। रातमें किसी जानवरके चलनेसे पत्तोंकी खड़खड़ाहट भी होती तो शबरी बाहर आकर देखती कि कहीं

राम तो नहीं आ गये! वह प्रतिदिन कुटियाके बाहर पुष्प बिछाती और तरह-तरहके फल लाकर रखती। फलोंमें भी चखकर बढ़िया-बढ़िया फल रामजीके लिये रखती। रामजी नहीं आते तो दूसरे दिन फिर ताजे फल लाकर रखती। उसके मनमें बड़ा उत्साह था कि रामजी आयेंगे तो उनको भोजन कराऊँगी।

प्रतीक्षा करते-करते एक दिन शबरीकी साधना पूर्ण हो गयी! मुनिके वचन सत्य हो गये! भगवान् राम शबरीकी कुटियामें पधारे—

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥

(मानस, अरण्य० ३४। ३)

दूसरे बड़े-बड़े ऋषि-मुनि प्रार्थना करते हैं कि महाराज! हमारी कुटियामें पधारो। पर भगवान् कहते हैं कि नहीं, हम तो शबरीकी कुटियामें जायँगे!

मोटा मोटा मुनिना आश्रम मुकीने,
सबरी ने घेर जाय छे रे,
वालो भगती तणे वश थाय छे रे।

जैसे शबरीके हृदयमें भगवान्‌से मिलनेकी उत्कण्ठा लगी है, ऐसे ही भगवान्‌के मनमें शबरीसे मिलनेकी उत्कण्ठा लगी है! भगवान्‌का स्वभाव है कि जो उनको जैसे भजता है, वे भी उसको वैसे ही भजते हैं—**'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्'** (गीता ४। ११)।

शबरीके आनन्दकी सीमा नहीं रही! वह भगवान्‌के चरणोंमें लिपट गयी। जल लाकर उसने भगवान्‌के चरण धोये। फिर आसन बिछाकर उनको बैठाया। फल लाकर भगवान्‌के सामने रखे और प्रेमपूर्वक उनको खिलाने लगी। शबरी पुराने जमानेकी

लम्बी स्त्री थी। रामजी बालककी तरह छोटे थे। जैसे माँ बालकको भोजन कराये, ऐसे शबरी प्यारसे रामजीको फल खिलाने लगी और रामजी भी बड़े प्यारसे उनको खाने लगे—

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥

(मानस, अरण्य० ३४)

२६. हल्ला मत करो

एक राजाको बोध (तत्त्वज्ञान) हो गया। उसने राजदरबारमें अपने मंत्रियोंसे पूछा कि किसीको कोई दुर्लभ वस्तु मिल जाय तो वह क्या करे? किसी मंत्रीने कहा कि उसको छिपाकर रखना चाहिये, किसीने कहा कि उसको सुरक्षित रखना चाहिये, किसीने कहा कि तिजोरीमें बन्द कर देना चाहिये, आदि-आदि। राजाको किसी मंत्रीके उत्तरपर सन्तोष नहीं हुआ। उसने अपने राज्यमें ढिंढोरा पिटवाया कि कोई जानता हो तो मेरी इस बातका उत्तर दे। राज्यके अनेक व्यक्ति आये और उन्होंने अपनी-अपनी बात राजाके सामने रखी, पर राजाको सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। उसके राज्यमें एक बनिया रहता था। उसको भी बोध हो चुका था। उसने राजपुरुषोंके द्वारा राजाको कहलवाया कि किसीको कोई दुर्लभ वस्तु मिल जाय तो वह हल्ला नहीं करे, चुप रहे। राजाने यह बात सुनी तो उसको बड़ा सन्तोष हुआ कि बनिया बात ठीक कहता है! राजाने कहा कि हम खुद उससे मिलने जायँगे।

बनियेके पास समाचार पहुँचा कि अमुक समय राजा आपसे

मिलनेके लिये पधार रहे हैं। नियत समयपर राजा उस बनियेके घर पहुँचा। साधारण-सा घर था। बनियेने राजाके बैठनेके लिये बोरा बिछा दिया। राजाने बनियेसे बातचीत की। फिर राजाने बनियेसे कहा कि तुम कुछ भी माँगो, मैं देनेको तैयार हूँ। बनियेने कहा—'अब आगेसे बिना बुलाये आप आना मत और मिलनेके लिये मेरेको बुलाना मत!' राजाने सोचा था कि अधिक-से-अधिक यह राज्य माँग लेगा, इससे अधिक और क्या माँगेगा। पर जब बनियेके मुखसे यह बात सुनी तो राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। राजाने कहा कि आपकी बातका तात्पर्य मैं समझा नहीं! बनियेने कहा—'महाराज! मैंने आपको मेरेसे मिलने या मेरेको बुलानेके लिये मना किया है, पर मैं आपसे नहीं मिलूँगा—ऐसा नहीं कहा है। आपके लिये मना इसलिये किया कि लोगोंमें प्रचार हो जायगा कि इनकी राजासे जान-पहचान है। इसलिये लोग मेरेको तंग करेंगे। कोई कहेगा कि मेरा अमुक काम करवा दो, कोई कहेगा कि राजासे कहकर मेरी नौकरी लगवा दो, कोई कहेगा कि मेरी सजा माफ करवा दो, तो एक नई आफत पैदा हो जायगी! इसलिये आप न तो आयें, न मेरेको बुलायें, पर मैं जब चाहूँगा आपसे मिल लूँगा। मेरे मिलनेकी मैंने मनाही नहीं की है। वास्तवमें अब न आपको मेरेसे मिलनेकी जरूरत रही, न मेरेको आपसे मिलनेकी जरूरत रही!'

२७. जगत्की प्रीत

एक सन्तके पास एक व्यक्ति सत्संगके लिये आया करता था। उस व्यक्तिका विवाह हो गया तो उसका सत्संगमें आना कम हो गया। जब सन्तान हो गयी तो सत्संगमें आना बहुत कम हो गया। सन्तने उससे कहा कि तू कुछ दिनोंके लिये मेरे पास आ जा और सत्संग कर। वह बोला कि मेरी स्त्रीका मेरेसे बड़ा प्यार है, वह मेरे बिना रह नहीं सकती! मैं कैसे आऊँ? सन्त बोले कि यह तेरा वहम है, ऐसी बात है नहीं। वह व्यक्ति माना नहीं तो सन्तने कहा कि तेरेको मेरी बातपर विश्वास नहीं होता तो तू परीक्षा करके देख ले। वह व्यक्ति इसके लिये तैयार हो गया। सन्तने उसको प्राणायामके द्वारा श्वास रोकना सिखा दिया और सब बात समझा दी।

एक दिन सुबहके समय उस व्यक्तिने अपनी स्त्रीसे कहा कि आज खीर और लड्डू बनाओ। आज हम सब खीर और लड्डू खायेंगे। स्त्रीने बढ़िया खीर और लड्डू बना दिये। थोड़ी देरमें वह व्यक्ति बोला कि मेरे पेटमें पीड़ा हो रही है! स्त्रीने कहा कि आप लेट जाओ। वह पलंगपर लेट गया। थोड़ी देर लेटनेके बाद उसने प्राणायामके द्वारा अपने श्वास ऊपर चढ़ा लिये। स्त्रीने देखा कि पतिका तो शरीर शान्त हो गया! अब क्या करें! उसने विचार किया कि खीर और लड्डू बने पड़े हैं। लड्डू तो कई दिनतक रह जायँगे, पर खीर खराब हो जायगी। अगर मैं अभी रोना-चिल्लाना शुरू कर दूँगी तो पड़ोसी लोग इकट्ठे हो जायँगे। फिर खीर यों ही रह जायगी! उसने दरवाजा बन्द कर दिया और बच्चेको साथ लेकर जल्दी-जल्दी

खीर खा ली। लड्डू डिब्बेमें बन्द करके रख दिये। फिर उसने दरवाजा खोल दिया और पतिके पास बैठकर रोने लगी। रोते हुए वह बोली—

साँईं स्वर्ग पधारया, कुछ मैनूँ वी आखो!
(पतिदेव स्वर्ग पधार गये, कुछ मेरेसे तो बोलो!)

इतनेमें वह व्यक्ति भी उठ बैठा और बोला—

खीर लबालब पा गयी, कुछ पिन्नी वी चक्खो!
(खीर तो लबालब पी ली, अब कुछ लड्डू भी चख लो!)

२८. सौ रुपयेकी एक बात

एक सेठ था। वह बहुत ईमानदार तथा धार्मिक प्रवृत्तिवाला था। एक दिन उसके यहाँ एक बूढ़े पण्डितजी आये। उनको देखकर सेठकी उनपर श्रद्धा हो गयी। सेठने आदरपूर्वक उनको बैठाया और प्रार्थना की कि मेरे लाभके लिये कोई बढ़िया बात बतायें। पण्डितजी बोले कि बात तो बहुत बढ़िया बताऊँगा, पर उसके दाम लगेंगे! एक बातके सौ रुपये लगेंगे! सेठने कहा कि आप बात बताओ, रुपये मैं दे दूँगा। पण्डितजी बोले—'छोटा आदमी यदि बड़ा हो जाय तो उसको बड़ा ही मानना चाहिये, छोटा नहीं मानना चाहिये।' सेठने मुनीमसे पण्डितजीको सौ रुपये देनेके लिये कहा। मुनीमने सौ रुपये दे दिये। सेठने कहा—और कोई बात बतायें। पण्डितजी बोले—'दूसरेके दोषको प्रकट नहीं करना चाहिये।' सेठके कहनेपर मुनीमने इस बातके भी सौ रुपये दे दिये। सेठ बोला—और कोई बात बतायें। पण्डितजी बोले—'जो काम नौकरसे हो जाय, उसको करनेमें

अपना समय नहीं लगाना चाहिये।' मुनीमने इसके भी सौ रुपये दे दिये। सेठ बोला—'एक बात और बता दें। पण्डितजी बोले—'जहाँ एक बार मन फट जाय, वहाँ फिर नहीं रहना चाहिये।' मुनीमने इस बातके भी सौ रुपये दे दिये। पण्डितजी चले गये। सेठने चारों बातें याद कर लीं और उनको घरमें तथा दूकानमें कई जगह लिखवा दिया।

कुछ समयके बाद सेठके व्यापारमें घाटा लगना शुरू हो गया। घाटा लगते-लगते ऐसी परिस्थिति आयी कि सेठको शहर छोड़कर दूसरी जगह जाना पड़ा। साथमें मुनीम भी था। चलते-चलते वे एक शहरके पास पहुँचे। सेठने मुनीमको शहरमें कुछ खाने-पीनेका सामान लानेके लिये भेजा। दैवयोगसे उस शहरके राजाकी मृत्यु हो गयी थी। उसकी कोई सन्तान नहीं थी। अतः लोगोंने यह फैसला किया था कि जो भी व्यक्ति शहरमें प्रवेश करेगा, उसको ही राजा बना दिया जायगा। उधर मुनीम शहरमें गया तो द्वारके भीतर प्रवेश करते ही लोग उसको हाथीपर बैठाकर धूमधामसे महलमें ले गये और राजसिंहासनपर बैठा दिया।

इधर सेठ मुनीमके लौटनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब बहुत देर हो गयी, तब सेठ मुनीमका पता लगानेके लिये खुद शहरमें गया। शहरमें जानेपर सेठको पता लगा कि मुनीम तो यहाँका राजा बन गया है! सेठ महलमें जाकर उससे मिला। राजा बने हुए मुनीमने सारी कथा सेठको सुनायी। सेठको पण्डितजीकी बात याद आयी कि 'छोटा आदमी यदि बड़ा हो जाय तो उसको बड़ा ही मानना चाहिये, छोटा नहीं मानना चाहिये'। सेठने राजाको प्रणाम किया। राजाने उसको मन्त्री

बनाकर अपने पास रख लिया।

राजाके घुड़सालका जो अध्यक्ष था, उसका रानीके साथ अनैतिक सम्बन्ध था। एक दिन संयोगसे सेठने रानीको उसके साथ शयन करते हुए देख लिया। दोनोंको नींद आयी हुई थी। सेठको पण्डितजीकी बात याद आयी कि 'दूसरेके दोषको प्रकट नहीं करना चाहिये'। सेठने रस्सीपर अपनी शाल डाल दी, जिससे दूसरा कोई उनको देख न सके। जब रानीकी नींद खुली, तब उसने सामने रस्सीपर शाल टँगी हुई देखी। उसने पता लगवाया कि यह शाल किसकी है। पता लगा कि यह शाल मन्त्री (सेठ)-की है। उसके मनमें विचार आया कि यह मन्त्री राजाके सामने मेरी पोल खोल देगा; क्योंकि दोनोंमें बड़ी मित्रता है! अतः मेरेको पहले ही ऐसा काम करना चाहिये, जिससे यह खुद ही फँस जाय। रानी सेठकी शाल लेकर राजाके पास गयी और बोली कि आज रातमें आपका मन्त्री बुरी नीयतसे मेरे पास आया था। परन्तु मैंने उसकी कुचेष्टाको सफल नहीं होने दिया। मेरे चिल्लानेके डरसे वह भागने लगा तो मैंने उसकी शाल छीन ली। यह देखो उसकी शाल! राजाने देखा तो पहचान लिया कि जब वह मुनीम था, तब उसने ही यह शाल खरीदकर सेठको दी थी। रानीकी चिकनी-चुपड़ी बातोंसे राजाकी बुद्धि फिर गयी! उसने रानीकी सलाहसे सेठको खत्म करनेका विचार कर लिया!

दूसरे दिन राजाने सेठको कसाईसे मांस लानेके लिये कहा। उधर कसाईको पहले ही कह दिया कि कोई आदमी तेरे पास मांस लेनेके लिये आये तो उसको मार देना। सेठको बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं मांस छूतातक भी नहीं, फिर भी राजाने

मेरेसे मांस लानेके लिये कह दिया! इसमें जरूर कुछ-न-कुछ हेतु है! सेठको पण्डितजीकी बात याद आयी कि 'जो काम नौकरसे हो जाय, उसको करनेमें अपना समय नहीं लगाना चाहिये'। सेठने मांस लानेके लिये अपने नौकरको भेज दिया। कसाईने नौकरको मार दिया। इधर राजाको गुप्तचरोंके द्वारा घुड़सालके अध्यक्षके साथ रानीके अनैतिक सम्बन्धका पता लग गया। राजाको बड़ा भारी पश्चात्ताप हुआ कि रानीकी बातोंमें आकर मैंने इतने ईमानदार सेठको मरवा दिया! बादमें पता लगा कि सेठ तो जीवित है! राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई। वह एकान्तमें सेठके पास गया और अपनी भूलके लिये क्षमा माँगी। राजाने पूछा कि आपकी शाल रानीके पास कैसे आयी? सेठने कहा कि पण्डितजीकी कही हुई सौ-सौ रुपयोंवाली चार बातें तो आप जानते ही हैं, मैं उन्हींका पालन किया करता हूँ। रानी घुड़सालके अध्यक्षके पास लेटी थी और दोनोंको नींद आ गयी थी। मेरेको पण्डितजीकी कही हुई बात याद आ गयी कि दूसरेके दोषको प्रकट नहीं करना चाहिये। इसलिये मैंने उनका दोष ढकनेके लिये रस्सीपर शाल डाल दी। वही शाल रानीने उठा ली और आपके पास ले गयी। राजाने सेठसे प्रार्थना की कि अब आप पुनः अपना मन्त्री-पद सँभालें। सेठको पण्डितजीकी बात याद आ गयी कि 'जहाँ एक बार मन फट जाय, वहाँ फिर नहीं रहना चाहिये'। सेठ बोला कि अब मैं यहाँ नहीं रहूँगा, चला जाऊँगा। राजाने रुकनेके लिये बहुत प्रार्थना की, पर सेठ माना नहीं और वहाँसे चला गया।

२९. बोला तो मरा!

एक राजा था। उसकी कोई सन्तान नहीं थी। एक बार नगरमें एक अच्छे सन्त आये। राजा उनके पास गया और सन्तानके लिये प्रार्थना की। सन्तने कहा कि राजन्! तुम्हारे प्रारब्धमें सन्तान लिखी नहीं है। इस विषयमें मैं कुछ नहीं कर सकता। राजा उदास मनसे वहाँसे लौट पड़ा। रास्तेमें उन्हीं सन्तका एक शिष्य मिल गया। शिष्यने पूछ लिया कि महाराज! आप यहाँ कैसे आये? राजाने कहा कि मैं सन्तानकी कामनासे आया था, पर काम हुआ नहीं! शिष्यने कह दिया कि चिन्ता मत करो, आपकी सन्तान हो जायगी! राजा प्रसन्न होकर महलमें लौट आया। इधर गुरुजीको मालूम हुआ तो वे शिष्यपर बड़े नाराज हुए कि राजाके भाग्यमें सन्तानका योग नहीं था, तुमने सन्तान होनेकी बात क्यों कह दी? शिष्य बोला कि क्या करूँ, मुँहसे निकल गया! गुरुजीने कहा कि अपने वचनके कारण अब तुम्हें ही राजाके घर पुत्र बनकर जन्म लेना पड़ेगा।

समय पाकर राजाके घर एक पुत्रका जन्म हुआ। पुत्र सब शुभ लक्षणोंसे सम्पन्न था, पर उसमें एक दोष था कि वह मुँहसे कुछ बोलता नहीं था। राजाने अच्छे-अच्छे वैद्योंको दिखाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। राजाने घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति राजकुमारसे बुलवायेगा, उसको एक लाख रुपये इनाममें दिये जायँगे। अनेक व्यक्ति आये, उन्होंने तरह-तरहके उपाय किये, पर कोई भी राजकुमारसे बुलवा नहीं सका।

समय बीतता गया। राजकुमार कुछ बड़ा हो गया। एक दिन राजाके आदमी राजकुमारको वनमें घुमाने ले गये। वहाँ एक

शिकारी बैठा था और पक्षीको खोज रहा था कि कोई पक्षी दिखायी दे तो उसको मारूँ। इतनेमें एक पेड़पर बैठा पक्षी बोल पड़ा। शिकारीकी दृष्टि उस पक्षीकी तरफ गयी और उसने पक्षीको मार गिराया। यह देखते ही राजकुमारके मुँहसे निकल पड़ा—'बोला तो मरा!' यह सुनते ही राजकुमारके साथ आये आदमी बड़े हर्षित हो गये कि आज तो राजकुमार बोल गया! वे राजाके पास गये और उसको समाचार दिया कि आज वनमें राजकुमार बोल पड़ा। राजाने उनसे कहा कि मेरे सामने बुलवाओ, तब मैं मानूँगा। उन आदमियोंने बहुत प्रयत्न किया, पर राजकुमार कुछ बोला नहीं। राजाने कहा कि तुम झूठ बोलते हो, मैं तुम्हें फाँसी दूँगा। राजकुमार फिर बोल उठा—'बोला तो मरा!' राजाने बड़ा आश्चर्य किया। उसने राजकुमारसे प्रार्थना की कि साफ-साफ कहो, बात क्या है? अब राजकुमार बोला—'महाराज! मैं वही साधु हूँ, जिसने आपको सन्तान होनेका आशीर्वाद दिया था। आपके प्रारब्धमें सन्तान नहीं थी, पर मैं बोल गया, इसलिये मेरेको आपके घर जन्म लेना पड़ा! अगर मैं न बोलता तो मेरेको दोबारा जन्म न लेना पड़ता। पक्षी भी बोला तभी शिकारीके द्वारा मारा गया। इन आदमियोंने आपको मेरे बोलनेका समाचार दिया तो परिणाममें फाँसी लगने लगी। यह सब बोलनेका ही परिणाम है। इसीलिये मेरे मुँहसे निकला—'बोला तो मरा!' अब मैं भी जाता हूँ; क्योंकि मैं बोल गया! ऐसा कहकर राजकुमार मर गया।

सन्तोंने ठीक ही कहा है—

जनहरिया संसार में, बहु बोल्यां बहु दुक्ख।
चुप रहिये हरि सुमिरिये, जो जिव चाह सुक्ख॥

३०. त्यागके आदर्श
(सच्ची घटनाएँ)

बद्रीनारायणमें एक साधुकी अँगुलीमें पीड़ा हो गयी। किसीने कहा कि यहाँ अस्पताल है, जहाँ मुफ्तमें इलाज होता है। आप वहाँ जाकर पट्टी बँधवा लें। उस साधुने उत्तर दिया कि अँगुलीकी पीड़ा तो मैं सह लूँगा, पर मैं किसीको पट्टी बाँधनेके लिये कहूँ—यह पीड़ा मेरेसे सही नहीं जाती!

× × × ×

एक साधु थे। उनसे किसीने पूछा कि 'आपके पास एक पैसा भी नहीं है, फिर आप भोजन कहाँ पाते हो?' साधुने कहा कि 'भिक्षा पा लेते हैं'। उसने फिर पूछा कि कभी भिक्षा न मिले तो? साधु बोला—'तो फिर भूखको ही पा लेते हैं!' भूखको पानेका तात्पर्य है कि आज हम भोजन नहीं करेंगे; क्योंकि भूखका ही भोजन कर लिया!

× × × ×

एक सज्जन साइकिलमें चढ़कर कहीं जा रहे थे। साइकिल सड़कके बीचमें थी। पीछेसे एक ट्रकवाला आया और ट्रक रोककर बोला कि 'अरे! बीचमें क्यों चलते हो? या इस तरफ चलो, या उस तरफ!' सज्जनको चेत हो गया कि जीवनमें भी मैं ऐसे ही बीचमें चल रहा हूँ, अब एक तरफ हो जाना चाहिये। वे सब कुछ छोड़कर साधु बन गये!

× × × ×

एक साधु थे। वे किसीसे कुछ माँगते नहीं थे। माँगना तो दूर रहा, यदि कोई उनसे पूछता कि रोटी लोगे तो वे साफ 'ना'

कह देते, भले ही वे दो-तीन दिनसे भूखे क्यों न हों! हाँ, उनके सामने कोई रोटी रख देता तो वे खा लेते थे।

× × × ×

ऋषिकेशकी बात है। एक साधु बाहर गये हुए थे। पीछेसे कोई उनकी कुटियामें ठण्डाईकी सामग्री रख गया। साधुने आकर उसे देखा तो वे कुटियाके भीतर नहीं गये, बाहर ही रहे। जबतक चींटियाँ उस सामग्रीको खा नहीं गयीं, तबतक वे साधु कुटियाके बाहर ही रहे!

× × × ×

ऋषिकेशके प्रसिद्ध सन्त श्रीस्वयंज्योतिजी महाराजकी फटी लँगोटी देखकर एक साधु सुई-धागा ले आया। महाराजजीने कहा कि सुई-धागा यहीं रख दो, मैं खुद लँगोटी सिल लूँगा। महाराजज़ीने अपने हाथोंसे लँगोटी सिल ली। दूसरे दिन वह साधु आया तो महाराजजीने उसको सुई-धागा लौटा दिया। वह साधु बोला कि इसकी फिर कभी भी जरूरत पड़ सकती है, इसलिये पासमें सुई-धागा रहना चाहिये। महाराजजीने कहा कि इस 'चाहिये' को मिटानेके लिये ही तो हम यहाँ जंगलमें आये हैं! इस सुई-धागेको यहाँसे ले जाओ। यह 'चाहिये' हमें नहीं चाहिये!

× × × ×

एक संन्यासी थे। एक बार मेलेमें उन्होंने अपनी स्त्रीको देखा तो पूछ बैठे कि तुम यहाँ कब आयी? स्त्रीने उत्तर दिया कि आपने संन्यास ले लिया, क्या अब भी मेरेको पहचानते हो? उत्तर सुनकर संन्यासीको इतनी लज्जा आयी कि उन्होंने अपना सिर झुका लिया। फिर उन्होंने जीवनभर सिर झुकाये

रखा, कभी किसीको सिर उठाकर नहीं देखा।

× × × ×

काशीसे विद्या पढ़कर एक अच्छे विद्वान् ब्राह्मण नगरमें आये। उनका सत्संग करते-करते वहाँके राजाकी उनके साथ मित्रता हो गयी। राजाने उनको मकान बना दिया, उनका विवाह करा दिया और अन्तमें अपना आधा राज्य भी उनको दे दिया। एक दिन राजाने अपने ब्राह्मण मित्रसे कहा कि जो कुछ मेरे पास है, वह तुम्हारे पास भी है। बताओ, तुममें और मुझमें क्या फर्क है? ब्राह्मणने कहा कि कभी मौका पड़नेपर फर्क बताऊँगा। एक दिन दोनों घूमनेके लिये चार घोड़ोंकी बग्घीपर चढ़कर बाहर गये। ब्राह्मणने राजासे कहा कि तुम फर्क पूछते थे, मैं अभी जा रहा हूँ, तुम भी मेरे साथ आ जाओ! राजा देखता रह गया और वह ब्राह्मण चला गया, फिर कभी लौटकर नहीं आया। राजा फर्क समझ गया!

× × × ×

समुद्र-तटकी दीवारपर एक सज्जन बैठे थे। उन्होंने देखा कि एक जवान आदमी हाथमें धोती-लोटा लिये आया। उसने धोती-लोटा किनारेपर रख दिया और कपड़े उतारकर स्नानके लिये समुद्रमें घुस गया। इतनेमें समुद्रकी एक बड़ी लहर आयी और उसको अपने साथ ले गयी! धोती-लोटा किनारे पड़ा रह गया और वह आदमी फिर समुद्रसे बाहर नहीं आया। दीवारपर बैठे सज्जन यह सब देख रहे थे। उनको जीवनकी क्षणभंगुरताका साक्षात्कार हो गया था। वे भी दीवारसे उतरकर अज्ञात स्थानकी ओर चल दिये और भगवान्‌के भजनमें लग गये। फिर कभी लौटकर घर नहीं गये।

त्यागमें विचार कैसा? कोई मरता है तो क्या विचार करके मरता है?

॥ श्रीहरि: ॥

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित परम श्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजीके कल्याणकारी साहित्य

कोड	पुस्तक	कोड	पुस्तक
465	साधन-सुधा-सिन्धु (४३ पुस्तकें एक ही जिल्दमें)	860	मुक्तिमें सबका अधिकार
		409	वास्तविक सुख
1675	सागरके मोती	1308	प्रेरक कहानियाँ
1598	सत्संगके फूल	1408	सब साधनोंका सार
1633	एक संतकी वसीयत	411	साधन और साध्य
400	कल्याण-पथ	412	तात्त्विक प्रवचन
401	मानसमें नाम-वन्दना	414	तत्त्वज्ञान कैसे हो? एवं मुक्तिमें सबका समान अधिकार
605	जित देखूँ तित तू		
406	भगवत्प्राप्ति सहज है	410	जीवनोपयोगी प्रवचन
535	सुन्दर समाजका निर्माण	822	अमृत-बिन्दु
1485	ज्ञानके दीप जले	821	किसान और गाय
1447	मानवमात्रके कल्याणके लिये	417	भगवन्नाम
1175	प्रश्नोत्तर मणिमाला	416	जीवनका सत्य
1247	मेरे तो गिरधर गोपाल	418	साधकोंके प्रति
403	जीवनका कर्तव्य	419	सत्संगकी विलक्षणता
436	कल्याणकारी प्रवचन	435	आवश्यक शिक्षा (सन्तानका कर्तव्य एवं आहारशुद्धि)
405	नित्ययोगकी प्राप्ति		
1093	आदर्श कहानियाँ	515	सर्वोच्चपदकी प्राप्तिका साधन
407	भगवत्प्राप्तिकी सुगमता	438	दुर्गतिसे बचो
408	भगवान्से अपनापन	439	महापापसे बचो
861	सत्संग-मुक्ताहार	440	सच्चा गुरु कौन?

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस —पो० गीताप्रेस website : www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org	© (०५५१) २३३४७२१; फैक्स २३३६९९७
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	© (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	© (०३३) २२६८६८९४; फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाईन्स स्टेशनके पास	© (०२२) २[illegible]३०७१७
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	© (०५१२) [illegible]३५१; फैक्स [illegible]५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	© (०६१२) [illegible]००३२५
राँची-८३४००१	कोर्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	© (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड e-mail: suratdukan@gitapress.org;	© (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
इन्दौर-४५२००१	जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	© (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७
जलगाँव-४२५००१	७, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	© (०२५७) २२२६३९३
हैदराबाद-५०००९६	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	© (०४०) २४७५८३११
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	© (०७१२) २७३४३५४
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	© (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़)	© (०७७१) ४०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	© (०५४२) २४१३५५१
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	© (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम e-mail:gitabhawan@gitapress.org	© (०१३५) २४३०१२२, २४३२७९२
कोयम्बटूर-६४१०१८	गीताप्रेस मैंशन, ८/१ एम, रेसकोर्स (तमिलनाडु)	© (०४२२) ३२०२५२१
बेंगलोर-५६००२७	१५, फोर्थ 'इ' क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड	© (०८०) २२९५५१९०

स्टेशन-स्टाल— दिल्ली (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना (मुख्य प्रवेशद्वार); राँची (नं० १); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); समस्तीपुर (नं० २); हावड़ा (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); कटक (नं० १); भुवनेश्वर (नं० १); राऊरकेला (पुस्तक-ट्राली); राजगांगपुर (पुस्तक-ट्राली); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी (नं० १); खड़गपुर (नं० १-२); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० १) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

फुटकर पुस्तक-दूकानें

चूरू-३३१००१	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क © (०१५६२) २५२६७४
ऋषिकेश-२४९१९२	मुनिकी रेती
तिरुपति-५१७५०४	शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, तिरुमलाई हिल्स

ISBN 81-293-0186-5
9788129301864

Code 1308▲